एक्ज़िम बैंक EXIM BANK भारतीय निर्यात-आयात बैंक EXPORT-IMPORT BANK OF INDIA

एक्ज़िमिअस

निर्यात लाभ

दिसंबर 2019
खंड XXXV अंक IV

इस अंक में

1 उत्तर अफ्रीका: भारत की व्यापार और निवेश संभावनाओं का द्वार

4 बिहार से निर्यात संवर्धन

6 सैडेक में विनिर्माण: वैल्यू चेन को बढ़ाना

8 एक्ज़िम बैंक ने आबिदजान में मत्स्य उद्योग के विकास में दी सहायता

9 एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएं

10 तिमाही गतिविधियां

11 एक्ज़िमिअस शिक्षण केंद्र की गतिविधियां

12 विकासशील देशों में शिक्षा और संस्थानों पर आलेख

13 चुनिंदा देशों का आर्थिक परिदृश्य

14 मुद्रा की प्रवृत्तियां

15 एक्ज़िम मित्र

16 आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

भारतीय निर्यात-आयात बैंक का तिमाही प्रकाशन
www.eximmitra.in

प्रधान कार्यालय :
केंद्र एक भवन, 21 वीं मंज़िल,
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल,
कफ़ परेड, मुंबई 400 005
Tel.: 022 2217 2600
Email : ccg@eximbankindia.in

उत्तर अफ्रीका: भारत की व्यापार और निवेश संभावनाओं का द्वार

अफ्रीका का उत्तरी क्षेत्र, जिसमें अल्जीरिया, मिस्र, लीबिया, मॉरिटानिया, मोरक्को, सूडान और ट्यूनीशिया शामिल हैं, अफ्रीका का अभिन्न हिस्सा है, जिसकी चुनौतियां, विजन और आकांक्षाएं अन्य अफ्रीकी क्षेत्रों के समान ही हैं। अफ्रीका की कुल आबादी का लगभग 20% इस क्षेत्र में निवास करता है। उत्तरी अफ्रीका 239 मिलियन की आबादी वाला बाजार है। कुछ देशों के सामने आने वाली चुनौतियों के बावजूद, इस क्षेत्र को सामान्य रूप से सभी तरह के लाभ मिलते हैं। इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह यूरोप, उप-सहारा अफ्रीका और एशिया से लगता है। इससे उन क्षेत्रों के साथ तरजीही व्यापार समझौतों के माध्यम से यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, अरब और अफ्रीका के कई बाजारों तक इसकी पहुंच आसान हो जाती है। युवा और तेजी से शिक्षित होती आबादी एक अन्य लाभ है और नवीकरणीय ऊर्जा, विनिर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी), पर्यटन और व्यवसाय विकास सेवाओं जैसे क्षेत्रों में यहां अपार संभावनाएं हैं।

उत्तरी अफ्रीका में तेल, गैस, फॉस्फेट जैसे अन्य प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं। अल्जीरिया, सूडान और लीबिया से हाइड्रोकार्बन और मॉरिटानियाई लौह अयस्क, मोरक्को के तांबे, जस्ते और सीसे की अच्छी मांग है, जिससे कई गैर अफ्रीकी देशों के औद्योगीकरण को बढ़ावा मिलता है।

उत्तरी अफ्रीका 4.3% की वृद्धि दर के साथ 2018 में पूर्वी अफ्रीका के बाद अफ्रीका में दूसरा सबसे तेजी से बढ़ता उप-क्षेत्र रहा। उच्च वृद्धि मुख्य रूप से 2018 में लीबिया द्वारा दर्ज की गई 17.9% वृद्धि के कारण रही। 2019 में अफ्रीका की 4% की अनुमानित वृद्धि दर में, 1.6% का योगदान उत्तरी अफ्रीका से ही रहा। इस क्षेत्र का नॉमिनल सकल घरेलू उत्पाद 2018 में 670.9 बिलियन यूएस डॉलर था, जो उसी वर्ष अफ्रीका के सकल घरेलू उत्पाद (2.3 ट्रिलियन यूएस डॉलर) का 28.9% था। इस क्षेत्र से 2018 में कुल निर्यात 153.2 बिलियन यूएस डॉलर के आसपास था, जो 2017 में 126.7 बिलियन यूएस डॉलर से काफी बढ़ गया है। इस क्षेत्र के कुल आयात में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है, 2018 में आयात 226.4 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच गया, जिसमें 2017 के 201.2 बिलियन यूएस डॉलर से 12.5% की वृद्धि दर्ज की गई।

उत्तरी अफ्रीका के साथ भारत के व्यापार संबंध

पिछले दस वर्षों के दौरान, उत्तरी अफ्रीका के साथ भारत का व्यापार 2009 में 7.5 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2018 में 11.1 बिलियन यूएस डॉलर हो गया, जिसमें 4.5% की सीएजीआर दर्ज की गई। जबकि उत्तरी अफ्रीका को भारत का कुल निर्यात 2009 में 3.3 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2018

चार्ट 1: उत्तरी अफ्रीका के साथ भारत का व्यापार

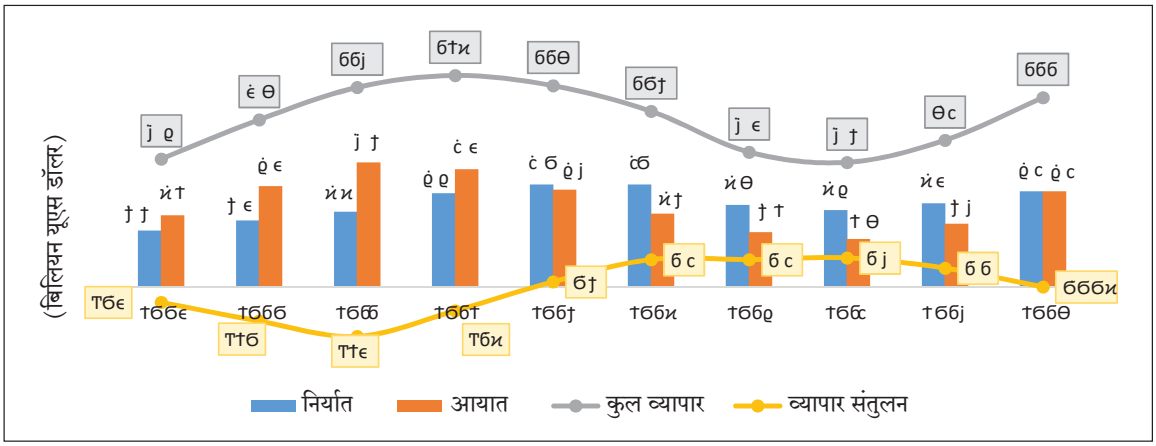

स्रोत: आईटीसी ट्रेडमैप, यूएन कॉमट्रेड और एक्ज़िम बैंक विश्लेषण

में 5.6 बिलियन यूएस डॉलर हो गया, लेकिन उत्तरी अफ्रीका से भारत के कुल आयात में मामूली वृद्धि हुई है, जो 2009 में 4.2 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2018 में 5.6 बिलियन यूएस डॉलर हो गया है। अफ्रीका को भारतीय निर्यात में उत्तरी अफ्रीका की हिस्सेदारी 2009 में 24.6% से घटकर 2018 में 20.7% रह गई है। इसी तरह अफ्रीका से भारत के आयात में भी पिछले दशक में उसकी हिस्सेदारी 19.9% से घटकर 13.4% रह गई।

यद्यपि वर्ष 2009 में उत्तरी अफ्रीका को भारत द्वारा किए गए निर्यातों में इलेक्ट्रिकल मशीनरी और उपकरण और लोहे की वस्तुओं का आधिक्य रहा, तथापि निर्यातों में इनके हिस्से में गिरावट दर्ज की गई। वहीं दूसरी ओर, पिछले दस वर्षों के दौरान निर्यातों में वाहनों और खनिज ईंधन का हिस्सा बढ़ा है। अफ्रीका को वर्ष 2018 में भारत द्वारा किए गए निर्यातों में रेलवे या ट्रामवे के अलावा अन्य वाहनों के संबंध में भारत के निर्यात का लगभग 25% उत्तरी अफ्रीका को रहा। उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र को भारत के निर्यात का एक अन्य उल्लेखनीय पहलू यह है कि इस क्षेत्र में भारत के निर्यातों में खनिज ईंधन का हिस्सा पिछले दशक में लगभग दोगुना हो गया है। उत्तरी अफ्रीका को भारत द्वारा निर्यातित अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुओं में कपास, जैविक रसायन, प्लास्टिक और प्लास्टिक की वस्तुएं, शर्करा और चीनी कन्फेक्शनरी और फार्मास्यूटिकल उत्पाद शामिल हैं।

मिस्र उत्तरी अफ्रीका में भारत का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है, जिसने वर्ष 2018 में इस क्षेत्र को भारत के निर्यातों का आधा हिस्सा खुद ही आयात किया। मिस्र अफ्रीका में भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य भी है। मिस्र के बाद अल्जीरिया और सूडान का स्थान रहा, जो अफ्रीका में भारत के शीर्ष दस निर्यात स्थलों में शामिल हैं। हाल के वर्षों में मोरक्को को भारत के निर्यात में भी वृद्धि हुई है।

उत्तरी अफ्रीका से भारत के आयात में बड़ा हिस्सा खनिज ईंधन, तेल और उसके उत्पादों का होता है। किन्तु इनकी हिस्सेदारी वर्ष 2009 के 69.7% से घटकर 2018 में 58.3% हो गई। अफ्रीका में अल्जीरिया और मिस्र भारत को खनिज ईंधन के क्रमशः चौथे और पांचवें सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता हैं। उत्तरी अफ्रीका के अन्य प्रमुख आयात उत्पादों में अकार्बनिक रसायन, उर्वरक और नमक, सल्फर, रत्न और सीमेंट शामिल हैं। वर्ष 2018 में अफ्रीका द्वारा भारत को उर्वरकों के निर्यात का 95% से अधिक; 56% से अधिक अकार्बनिक रसायन; 27% से अधिक कपास; 13% से अधिक खनिज ईंधन का निर्यात उत्तरी अफ्रीका द्वारा ही किया गया।

मॉरिटानिया, मोरक्को और ट्यूनीशिया को भारत के निर्यात अपेक्षाकृत अधिक विविधतापूर्ण हैं। इस क्षेत्र के अन्य सभी देश कच्चे तेल और गैस के आपूर्तिकर्ता हैं। अफ्रीका से भारत को कपास के शीर्ष दस निर्यातकों में मिस्र भी शामिल है। निर्यात के मामले में, मिस्र उत्तरी अफ्रीकी क्षेत्र में भारत के लिए सबसे बड़ा आयात बाजार है। हाइड्रोकार्बन आयात के कारण अल्जीरिया से भारत का आयात भी अपेक्षाकृत अधिक बना हुआ है। इसी तरह, भारत मोरक्को के फॉस्फेट और उसके डेरिवेटिव्स के लिए प्रमुख बाजारों में से एक है।

भारत–उत्तरी अफ्रीका निवेश संबंध

भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग के अनुसार, अप्रैल 2000–मार्च 2019 के बीच उत्तरी अफ्रीका से भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह 153.5 मिलियन यूएस डॉलर रहा। लगभग 91% निवेश मोरक्को से आया, इसके बाद मिस्र (5.7%) और ट्यूनीशिया (3.2%) का स्थान रहा।

संचयी रूप से, अप्रैल 1996 से मार्च 2019 के दौरान, 7 उत्तरी अफ्रीकी देशों में, संयुक्त उद्यमों (जेवी) और पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनियों में भारतीय प्रत्यक्ष निवेश, इक्विटी, ऋण और जारी गारंटियों के रूप में 2.9 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। यह इस अवधि के दौरान अफ्रीका में भारत के विदेशी निवेश का 4.5% रहा। वर्ष 2018–19 के दौरान, इन देशों को एफडीआई जावक 48.6 मिलियन यूएस डॉलर रहा। वर्ष 2018–19 के दौरान भारत से इस क्षेत्र को कुल एफडीआई जावक में से, मिस्र के लिए सबसे अधिक एफडीआई जावक रहा, जो इस क्षेत्र को कुल एफडीआई जावक का 45.3% रहा। इसके बाद मोरक्को (27.6%), अल्जीरिया (16.2%) और लीबिया (10.6%) को रहा।

भारत–उत्तरी अफ्रीका सहयोग: सुझाव और आगे की राह

अफ्रीका के साथ G20 समझौता: तीन उत्तरी अफ्रीकी देश मिस्र, मोरक्को और ट्यूनीशिया, अफ्रीका के साथ जी20 समझौता (सीडब्ल्यूए) पहल में शामिल हो गए हैं। भारत सीडब्ल्यूए पहल को एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (एएजीसी) पहल से भी जोड़ सकता है। चूंकि एएजीसी का उद्देश्य एशिया और अफ्रीका की अर्थव्यवस्थाओं को न केवल भौतिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से जोड़ना है, बल्कि संस्थागत, नियामक और डिजिटल रूप से जोड़ना भी है। इसलिए एएजीसी और सीडब्ल्यूए पहलें एक दूसरे की पूरक हैं।

अफ्रीकी महाद्वीप मुक्त व्यापार समझौता: मई 2019 में अफ्रीकी महाद्वीप मुक्त व्यापार समझौता प्रभावी हुआ। सभी उत्तरी अफ्रीकी देशों ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते से भारतीय फर्मों और निवेशकों के लिए एक बड़े, एकीकृत, सरलीकृत और अधिक मजबूत अफ्रीकी बाजार में अवसर पैदा होने की उम्मीद है। भारत के लिए अफ्रीका किसी अल्पकालिक रिटर्न के लिए एक गंतव्य स्थल मात्र नहीं है, बल्कि भारत मध्यम और दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए खुद को अफ्रीका के एक साझेदार के रूप में देखता है। दोनों क्षेत्रों के बीच सहयोग भारत और अफ्रीका दोनों के लिए फायदेमंद साबित होगा।

भारत–मिस्र सहयोग: वर्ष 2019 में अफ्रीकी संघ की अध्यक्षता करने वाला मिस्र आज अफ्रीकी महाद्वीप में महत्त्वपूर्ण भू–रणनीतिक स्थिति में है। मिस्र को अफ्रीका का केंद्र बनाकर और त्रिपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते के जरिए भारतीय निर्यातकों के लिए व्यवसाय के कई अवसर सृजित किए जा सकते हैं। क्योंकि मिस्र ही वह देश है, जो पूर्वी और दक्षिण अफ्रीका साझा बाजार (कोमेसा) के क्षेत्रीय आर्थिक समुदायों और दक्षिण अफ्रीकी विकास समुदाय (सैडेक) को एक मंच पर लाया है। मिस्र अरब और यूरोपीय संघ के बाजारों के लिए भी दोनों पक्षों के बीच मुक्त व्यापार समझौतों की मदद से एक केंद्र के रूप में काम कर सकता है।

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए): आईएसए भारत द्वारा शुरू किया गया 121 देशों का एक

गठबंधन है, जिनमें से अधिकांश देश ऐसे हैं, जहां अच्छी धूप खिलती है और जो या तो पूरी तरह से या आंशिक रूप से कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच पड़ते हैं। इस गठबंधन का प्राथमिक उद्देश्य जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के लिए सौर ऊर्जा के समुचित उपयोग की दिशा में काम करना है। उत्तरी अफ्रीकी देशों में अल्जीरिया, मिस्र और सूडान ने आईएसए फ्रेमवर्क समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारतीय कंपनियों के लिए निवेश के व्यापक अवसर पैदा होते हैं। मिस्र अपनी भौगोलिक निकटता और रणनीतिक स्थिति के चलते एक क्षेत्रीय और वैश्विक ऊर्जा केंद्र के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सऊदी अरब, साइप्रस के साथ चल रही विद्युतीकरण परियोजनाओं के साथ जॉर्डन, सूडान और लीबिया सहित पड़ोसी देशों के साथ विद्युतीकरण परियोजनाओं का हिस्सा बनकर एक क्षेत्रीय विद्युत इंटर-कनेक्शन केंद्र बन सकता है। मिस्र में हाल ही में दक्षिणी मिस्र के असवान शहर में बेनबान सोलर कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया गया है, जिसमें 200,000 सौर पैनल और 780 सन ट्रैकर लगे हैं। अधिकांश अफ्रीकी देश सौर बेल्ट में पड़ते हैं, जो सौर ऊर्जा अनुप्रयोगों के लिए सबसे सुविधाजनक हैं। इन अफ्रीकी देशों में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारतीय निवेशकों के लिए अपार संभावनाएं हैं, खासकर ऑफ ग्रिड क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति के लिए।

भारत-पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका परियोजना साझेदारी पर सीआईआई-एक्ज़िम बैंक रीजनल कॉन्क्लेव

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के साथ मिलकर 2005 से "भारत-अफ्रीका परियोजना भागीदारी" पर सीआईआई-एक्ज़िम बैंक कॉन्क्लेव का आयोजन करता रहा है। अब तक इस तरह के चौदह कॉन्क्लेव का आयोजन किया जा चुका है। ये कॉन्क्लेव दीर्घकालिक सुदृढ़ आर्थिक संबंध बनाने और सूचनाओं के आदान-प्रदान और संवाद के एक मंच के रूप में सामने आए हैं। परिणामतः इन आयोजनों से भारत और अफ्रीका के बीच संवाद भी बढ़ा है। पैन-अफ्रीका कॉन्क्लेव के अतिरिक्त, व्यवसाय वार्ताओं पर फोकस के लिए आउटरीच कार्यक्रम के रूप में अफ्रीका में क्षेत्रीय भागीदारी कॉन्क्लेव के आयोजन की जरूरत महसूस की गई। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार, इस प्रकार का पहला क्षेत्रीय आउटरीच कार्यक्रम पूर्वी अफ्रीकी क्षेत्र के लिए एक्ज़िम बैंक और सीआईआई द्वारा संयुक्त रूप से नवंबर 2017 के दौरान यूगांडा में आयोजित किया गया।

भारत-पूर्वी अफ्रीका कॉन्क्लेव की सफलता, उच्च स्तरीय प्रतिभागिता और प्राप्त सहयोग को देखते हुए दो अन्य क्षेत्रीय आउटरीच कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। एक आयोजन अक्टूबर 2018 में अबुजा, नाइजीरिया में पश्चिम अफ्रीकी क्षेत्र में और दूसरा अक्टूबर 2019 में लुसाका, ज़ाम्बिया में दक्षिण अफ्रीकी क्षेत्र में आयोजित किया गया। दोनों कार्यक्रम सफल रहे। तदनुसार, भारत-पश्चिम एशिया और पूर्वी अफ्रीका परियोजना भागीदारी पर पहले सीआईआई-एक्ज़िम बैंक कॉन्क्लेव का आयोजन करने का निर्णय लिया गया। यह आयोजन एक्ज़िम बैंक और सीआईआई द्वारा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय और विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मिलकर संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

भारत-पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका (वाना) परियोजना भागीदारी पर सीआईआई-एक्ज़िम बैंक क्षेत्रीय कॉन्क्लेव का आयोजन 6-7 नवंबर, 2019 को काहिरा, मिस्र में किया गया। इस क्षेत्रीय कॉन्क्लेव के 9 फोकस देशों में अल्जीरिया, मिस्र, इराक, जॉर्डन, लेबनान, मोरक्को, दक्षिणी सूडान, सूडान और ट्यूनीशिया शामिल रहे। इस कार्यक्रम के दौरान निम्नलिखित क्षेत्रों पर फोकस किया गया: कृषि और कृषि प्रसंस्करण, भवन निर्माण सामग्री, निर्माण, इंजीनियरिंग सामान, वित्त, खाद्य प्रसंस्करण, स्वास्थ्य सेवाएं, इन्फ्रास्ट्रक्चर, आईटी, ऊर्जा और अक्षय ऊर्जा, अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी), सेवा क्षेत्र और टेक्सटाइल क्षेत्र।

इस कॉन्क्लेव ने भारत और 9 वाना फोकस देशों के बीच विकासात्मक साझेदारी को सुदृढ़ करने के लिए संवाद के एक मंच के रूप में काम किया। आर्थिक और वाणिज्यिक विमर्श पर केंद्रित इस कार्यक्रम में बिजनेस टू गवर्नमेंट (बी2जी), बिजनेस टू बिजनेस (बी2बी) सहित सात सत्रों का आयोजन किया गया। यह कॉन्क्लेव भारतीय और अफ्रीकी निजी क्षेत्र तथा प्रमुख वित्तीय संस्थाओं के लिए एक मंच के रूप में सामने आया, जिसके जरिए वाना के लिए दीर्घावधि प्रतिबद्धता के साथ भारतीय निवेश और भागीदारी के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों और विशेष परियोजनाओं को चिह्नित करने में मदद मिली। इसके अतिरिक्त, कॉन्क्लेव के दौरान हुए विचार-विमर्श से विशाखन के लिए विभिन्न क्षेत्रों को चिह्नित करने में भी मदद मिली। इस प्रकार वैश्विक वैल्यू चेन के प्रसार और अंतरराष्ट्रीय उत्पादन नेटवर्क पर बढ़ी निर्भरता को देखते हुए बेहतर सहयोग सुनिश्चित किया जा सका। दक्षिण-दक्षिण सहयोग एजेंडा को आगे बढ़ाने के लिए भारतीय और वाना व्यवसायों तथा सरकारों के लिए नए विचार और रणनीतियां बनाने में इस कॉन्क्लेव की अहम भूमिका रही।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व माननीय आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री, माननीय नागर विमानन राज्य मंत्री और माननीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी ने किया। फोकस देशों और भारत, दोनों की वित्तीय संस्थाओं से 250 से अधिक प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इनमें भारत से व्यावसायिक जगत के लगभग 55 प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया। कॉन्क्लेव में उच्च स्तरीय पदाधिकारियों ने भी हिस्सा लिया। इनमें सूडान के व्यापार और उद्योग मंत्रालय के अवर सचिव श्री मोहम्मद अली अब्देला मोहम्मद अली, दक्षिण सूडान के ईएसी मामलों के अवर सचिव श्री मोउ मोउ एथियान कुओल, ट्यूनीशिया के विदेश व्यापार महानिदेशक श्री खालिद बिन अब्देला, जॉर्डन के उद्योग, व्यापार और आपूर्ति मंत्रालय के उप निदेशक-विदेश व्यापार, नीति निदेशालय डॉ. नबील एल्तेल, और मिस्र उद्योग संघ (फेडरेशन ऑफ इजिप्शियन इंडस्ट्रीज) के डेप्युटी चेयरमैन श्री तारिक तौफीक ने हिस्सा लिया। इस कॉन्क्लेव के उद्घाटन सत्र के दौरान श्री हरदीप सिंह पुरी द्वारा 'उत्तर अफ्रीका: भारत के लिए व्यापार और निवेश संभावनाओं का द्वार' शीर्षक से एक्ज़िम बैंक के प्रकाशन का विमोचन भी किया गया।

4 बिहार से निर्यात संवर्धन

बिहार, भारत के पूर्वी हिस्से में स्थित बंदरगाह विहीन प्रदेश है। इसकी अंतरराष्ट्रीय सीमा जहां नेपाल से लगती है, वहीं घरेलू सीमा इसे उत्तर प्रदेश, झारखंड और पश्चिम बंगाल से जोड़ती है। हाल के कुछ वर्षों में बिहार के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में वृद्धि दर्ज की गई है। 2011-12 से 2017-18 के दौरान राज्य के जीएसडीपी में 6.5 प्रतिशत की सम्मिश्र वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) दर्ज की गई। इससे भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में बिहार का योगदान बढ़ा है। बिहार की आर्थिक वृद्धि को बढ़ते पूंजीगत खर्च, उद्योगों, लॉजिस्टिक सुविधाओं और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे में विस्तार से रफ्तार मिली है। तथापि, 2016-17 के लिए किए गए आकलन बताते हैं कि बिहार के जीएसडीपी में वस्तु निर्यातों का योगदान मात्र लगभग 1.3 प्रतिशत रहा। यद्यपि, बिहार के समान आर्थिक स्थिति वाले दूसरे राज्यों की तुलना में यह स्थिति बेहतर है, लेकिन 12.1 प्रतिशत के राष्ट्रीय औसत की तुलना में यह योगदान काफी कम है। बिहार की आर्थिक वृद्धि को बढ़ाने के लिए निर्यात क्षेत्र में बहुआयामी उपायों की जरूरत है।

बिहार का निर्यात निष्पादन

बिहार से 2017-18 में वस्तु निर्यात 1.35 अरब यूएस डॉलर का रहा, जिसमें 2012-13 के 0.4 अरब यूएस डॉलर के मुकाबले उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया। तथापि, भारत से कुल वस्तु निर्यातों में बिहार से वस्तु निर्यातों का योगदान 1 प्रतिशत से भी कम रहा। अतः इस क्षेत्र में भी सुधार की काफी गुंजाइश है।

पेट्रोलियम उत्पाद राज्य के लिए महत्त्वपूर्ण निर्यात मद है। कृषि और संबंधित उद्योगों तथा टेक्सटाइल और गारमेंट श्रेणियों में निर्यात बढ़ने से गैर-तेल निर्यात खंड में 2016-17 से अच्छी वृद्धि दर्ज की गई है। लेकिन इस वृद्धि के बावजूद, बिहार के समग्र निर्यातों में गैर-तेल निर्यातों का हिस्सा एक तिहाई ही है। अतः इस क्षेत्र से निर्यात बढ़ाने के लिए भी एक सुनियोजित रणनीति की जरूरत है।

निर्यात वृद्धि के लिए रणनीतियां

अध्ययन में राज्य के औद्योगिक और निर्यात आधार के विशाखन का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है और ऐसे संभावित क्षेत्रों तथा बाजारों को चिह्नित किया गया है, जिन्हें लक्षित किया जा सके। राज्य को इन क्षेत्रों और बाजारों में अपने निर्यातों के विशाखन के लिए अपनी निर्यात स्पर्धात्मकता में भी सुधार करना होगा और एक सुनियोजित निर्यात रणनीति की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

समग्र रूप से देखें तो बिहार से निर्यातों के संवर्धन के लिए रणनीति की योजना में विभिन्न स्तरों पर रणनीतियां बनाना शामिल होगा। मोटे तौर पर ये रणनीतियां निम्नलिखित छह आवश्यक आयामों पर बनाई जा सकती हैं - फोकस उत्पाद और बाजार; बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और उसका लाभ उठाना; क्षमता विकास; वित्तीय प्रोत्साहन; निर्यात संवर्धन अभियान; और संस्थागत समन्वय।

फोकस उत्पाद और बाजार

यह मूल्य वर्धन पर आधारित निर्यातों के विशाखन के लिए निर्यात अवसर बढ़ाने के सक्षम तरीकों में से एक है। अध्ययन में संभावित उच्च मूल्य वर्धित उत्पादों को चिह्नित किया गया है, जो बिहार से निर्यातों के विशाखन में मददगार हो सकते हैं। इनमें कृषि उत्पाद, टेक्सटाइल और गारमेंट, रसायन और संबद्ध उत्पाद, फार्मास्यूटिकल्स, हस्तशिल्प उत्पाद और पर्यटन तथा आतिथ्य शामिल हैं।

कृषि और संबद्ध क्षेत्र में राज्य कृषि उत्पादों के बड़े स्तर पर प्रसंस्करण पर ध्यान केंद्रित कर सकता है और ऑर्गेनिक उत्पादन बढ़ा सकता है। टेक्सटाइल खंड में राज्य टेक्निकल टेक्सटाइल्स और अहिंसा सिल्क उत्पादन पर फोकस कर सकता है। इन दोनों ही उत्पादों के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में उच्च मूल्य हासिल किया जा सकता है। रसायन और फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों में अन्य के साथ-साथ रंगों और रंजकों, निर्माण रसायनों, सौंदर्य प्रसाधनों के घटकों और जल शोधन रसायनों पर फोकस किया जा सकता है। फार्मास्यूटिकल्स में मौजूदा निर्यात खंडों में क्षमता बढ़ाने तथा प्रतिरक्षात्मक उत्पादों, पशु चिकित्सा संबंधी वैक्सीनों एवं अपारदर्शी औषध मिश्रणों जैसे अन्य ऐसे खंडों में विशाखन की जरूरत है, जिन्हें अभी तक भुनाया नहीं गया है।

इसके अतिरिक्त, अध्ययन में इस ओर भी संकेत किया गया है कि अधिकांश उत्पाद श्रेणियों में बिहार से अधिकतर निर्यातक वर्तमान में प्रमुख आयातक देशों को निर्यात नहीं कर रहे हैं। अतः अपने उत्पादों के लिए नए-नए बाजारों तक पहुंचना राज्य के लिए जरूरी है। राज्य को नए क्षेत्रों पर भी ध्यान देने की जरूरत है। इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स तथा इंजीनियरिंग सामान जैसे उच्च-तकनीकी वाले क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। हालांकि, इन क्षेत्रों में उत्पादन और निर्यात इन खंडों में निर्यात उन्मुख प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) पर निर्भर करता है। बिहार सरकार को भारत सरकार के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के अनुरूप 'मेक इन बिहार' जैसा कार्यक्रम बनाने, अपनाने और उसे क्रियान्वित करने की जरूरत है।

बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और उसका लाभ उठाना

बेहतरीन निर्यात वृद्धि की इबारत लिखने और बिहार के समान अर्थव्यवस्था वाले राज्यों से प्रतिस्पर्धा के लिए बिहार को निर्यात के लिए अपने मौजूदा बुनियादी ढांचे का उन्नयन करने की जरूरत है। इसके लिए एक इनलैंड कंटेनर डिपो (आईसीडी) की स्थापना करना सबसे महत्त्वपूर्ण होगा। बिहार में फिलहाल एक आईसीडी है, जो पटना में है और इस पर केवल घरेलू ढुलाई होती है। द्वितीयक स्रोतों का इस्तेमाल करते हुए प्राथमिक शोध अध्ययन के आधार पर अध्ययन में मुजफ्फरपुर और भागलपुर में एक-एक आईसीडी स्थापित करने का सुझाव दिया गया है। इसके अतिरिक्त, निर्यात परिवहन के लिए पटना वाले आईसीडी में एक सीमा शुल्क मंजूरी संबंधी कार्यालय स्थापित करने का भी सुझाव दिया गया है।

पर्याप्त परिवहन, भंडारण और वितरण सेवाओं का अभाव भी देशभर के निर्यातकों के लिए एक बड़ा मसला है। यदि बिहार के संदर्भ में बात करें तो यह प्रमुख बाधा के रूप में उभरकर सामने आता है। क्योंकि बिहार से निर्यातों में जल्दी खराब होने वाले उत्पादों की अच्छी मात्रा है। अतः राज्य में गोदाम और कोल्ड चेन स्टोरेज संबंधी बुनियादी ढांचे का उन्नयन करने की जरूरत है। यदि उत्पादन के लगभग

70 प्रतिशत की भंडारण क्षमता भी मानें तो बिहार में 13 मिलियन एमटी क्षमता वाले गोदामों की जरूरत है, जबकि वर्तमान में सिर्फ 0.6 मिलियन एमटी की ही क्षमता है। इसके अतिरिक्त, राज्य में अनुमानित 2.2 मिलियन एमटी के कोल्ड चेन स्टोरेज बुनियादी ढांचे के विकास की भी जरूरत है।

अध्ययन में इस बात पर जोर दिया गया है कि बिहार में वर्तमान में कोई विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) नहीं हैं। विशेष आर्थिक क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए कोई नीति, कानून या नियम भी नहीं हैं। औद्योगिक विकास और निर्यातों में विशेष आर्थिक क्षेत्रों के महत्त्व को देखते हुए यह राज्य के लिए चिंता का विषय है। राज्य में निर्यात उन्मुख एफडीआई आकर्षित करने और निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना करना महत्त्वपूर्ण कदम होगा। अध्ययन में पटना, मुजफ्फरपुर या भागलपुर में विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाने की संस्तुति की गई है, जो सड़क और रेल मार्ग से बेहतर तरीके से जुड़े हुए हैं। राज्य के कृषि क्षेत्र से निर्यातों की अच्छी संभावना को ध्यान में रखते हुए इनमें से एक विशेष आर्थिक क्षेत्र केवल कृषि उत्पादों के लिए हो सकता है।

क्षमता विकास

राज्य में भौगोलिक उपदर्शन (जीआई) का दर्जा प्राप्त कई उत्पाद हैं। जीआई दर्जे का लाभ उठाने के लिए, जीआई ब्रांड को बाजार में एक विश्वसनीय और पसंदीदा ब्रांड के रूप में स्थापित करना और उसकी एक अलग जगह बनाना महत्त्वपूर्ण है। इस संबंध में, बिहार सरकार मूलतः बिहार से बनने वाले उत्पादों के लिए वैश्विक स्तर के प्रतिस्पर्धी ब्रांड बनाने हेतु एक ब्रांड इक्विटी फंड स्थापित कर सकती है। इस फंड से इन ब्रांडेड उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय बाजारों में मार्केटिंग के लिए भी सहायता ली जा सकती है। इसमें मखाना जैसे कृषि उत्पाद और लिट्टि-चोखा व लक्ठो जैसे खाद्य पदार्थ शामिल किए जा सकते हैं।

मानकों, विनियमों और गुणवत्ता की बात करें तो बहुत से आयातक देश उत्पादों के लिए विशिष्ट विवरण निर्धारित करते हैं और उन विवरणों का मानकों के अनुसार सख्ती से पालन जरूरी होता है और इन मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना स्टेकहोल्डरों की जिम्मेदारी होती है। इस संबंध में, फाइटो-सैनिटेशन, ऑर्गेनिक प्रमाणीकरण, कीटनाशक मुक्त उत्पादन के लिए कड़े परीक्षण, पैकेजिंग और लेबलिंग की जरूरत होगी। इसके लिए, सरकार कन्फर्माइट यूरोपीयन (सीई), चाइना कंपल्सरी सर्टिफिकेट (सीसीसी), आदि जैसे सांविधिक प्रमाणीकरण प्राप्त करने में हुए खर्च को रिफंड करने पर विचार कर सकती है। इसके साथ ही, इन प्रमाणीकरणों से संबंधित जानकारियों के प्रसार के लिए प्रमुख उत्पादन केंद्रों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं। इसमें प्रमाणीकरण के लिए आवेदन करने में मदद से लेकर बिहार सरकार द्वारा दिए जाने वाले सहयोग की जानकारी दी जा सकती है।

इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार, केंद्र सरकार की प्रौद्योगिकी अधिग्रहण निधि कार्यक्रम जैसी योजनाओं के अंतर्गत आवेदन प्रस्तुत करने में भी सहायता कर सकती है, ताकि उच्च-प्रौद्योगिकी वाले निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए निर्यातक इनका लाभ उठा सकें। चूंकि ये कार्यक्रम प्रौद्योगिकी अधिग्रहण की एक निश्चित लागत को ही पूरा करते हैं, इसलिए राज्य सरकार मामले-वार आधार पर अतिरिक्त वित्तीय सहायता भी प्रदान कर सकती है।

वित्तीय प्रोत्साहन

बिहार में निर्यात अभी उदीयमान अवस्था में है। ऐसे में राज्य के निर्यातकों को कुछ वित्तीय प्रोत्साहन दिए जा सकते हैं। ऐसा ही एक वित्तीय प्रोत्साहन ढुलाई भाड़े में सब्सिडी प्रदान करना हो सकता है। इस सब्सिडी से निर्यातकों को बुनियादी ढांचे के अभाव के चलते अपने निर्यातों की बढ़ी लागत को कम करने में मदद मिलेगी। बजट को ध्यान में रखते हुए, ढुलाई भाड़ा सब्सिडी योजना के अंतर्गत प्रतिपूर्ति की राशि और पात्रता जिला तथा उत्पाद-वार निर्धारित की जा सकती है।

निर्यात संवर्धन अभियान

कृषि और संबद्ध उत्पादों, समुद्री उत्पादों, रसायन और संबद्ध उत्पादों, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल और गारमेंट, इंजीनियरिंग सामान और पर्यटन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में निर्यातकों के प्रयासों को सम्मानित करने के लिए निर्यात पुरस्कारों की शुरुआत की जा सकती है। राज्य के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए अलग से पुरस्कारों की शुरुआत की जा सकती है।

निर्यात संवर्धन की दृष्टि से देखा जाए तो राज्य में क्लस्टरों का विकास और उन्नयन भी महत्त्वपूर्ण एजेंडा हो सकता है। आवश्यक पहले कदम के रूप में राज्य को मौजूदा क्लस्टरों का मूल्यांकन करने के लिए एक तंत्र बनाने की जरूरत है। क्लस्टरों के मूल्यांकन के आधार पर राज्य सरकार क्षमता विकास संबंधी गतिविधियों का आयोजन कर सकती है। क्षमता विकास के प्रमुख तत्त्वों में भौतिक बुनियादी ढांचे और भवनों, संस्थाओं का निर्माण तथा मानव संसाधनों का विकास शामिल होगा।

इसके अतिरिक्त, भारत सरकार की विपणन (मार्केटिंग) विकास सहायता योजना जैसी पहलें निर्यात संवर्धन गतिविधियों के लिए निर्यातकों के लिए मददगार साबित हुई हैं। अतः राज्य स्तर पर भी ऐसी ही योजना शुरू की जा सकती है। इस प्रकार की सहायता से निर्यातों का विशाखन करने में मदद मिल सकती है।

संस्थागत समन्वय

बिहार के समग्र आर्थिक परिवेश को इस रूप में विकसित करने की जरूरत है जो राज्य से निर्यातों को बढ़ावा देने में सक्षम हो। संबंधित राज्य मशीनरियों से बना संस्थागत ढांचा इस प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण हो सकता है। इस संदर्भ में, अध्ययन में बिहार सरकार के उद्योग विभाग के अंतर्गत बिहार निर्यात संवर्धन परिषद की स्थापना करने की संस्तुति की गई है, जिसका उद्देश्य राज्य से निर्यात निष्पादन को बढ़ावा देना होगा। इस परिषद की स्थापना राज्य सरकार, निर्यातकों और उद्योग संघों की भागीदारी से की जा सकती है। साथ ही यह परिषद विचारों तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान कर सकती है तथा निर्यातकों के सामने आने वाली परेशानियों को चिह्नित करने और उनसे निपटने के उपाय कर सकती है।

6 सैडेक में विनिर्माण: वैल्यू चेन को बढ़ाना

दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय या सैडेक देश अफ्रीकी क्षेत्र का अभिन्न हिस्सा हैं। वर्ष 2018 में अफ्रीका के सकल घरेलू उत्पाद और जनसंख्या का लगभग एक तिहाई हिस्सा इन्हीं देशों का रहा। सैडेक में वर्तमान में अंगोला, बोत्सवाना, कोमोरोस, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआर कांगो), एस्वातिनी, लेसोथो, मेडागास्कर, मलावी, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, नामीबिया, सेशेल्स, दक्षिण अफ्रीका, तंज़ानिया, ज़ाम्बिया और ज़िम्बाब्वे नामक 16 सदस्य देश हैं। अफ्रीका में प्रमुख क्षेत्रीय व्यापार संगठनों में अफ्रीकी क्षेत्र में सबसे अधिक योगदान (नॉमिनल जीडीपी के संदर्भ में) सैडेक क्षेत्र का ही है। यह क्षेत्र कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस और खनिजों जैसे कई अक्षय ऊर्जा संसाधनों से संपन्न है।

पिछले कुछ वर्षों में सैडेक की औसत आर्थिक वृद्धि अपेक्षाकृत सुस्त रही है। वर्ष 2018 में विकास दर 1.3% आंकी गई। हालांकि 2011 के बाद कृषि कच्चे माल, खनिज और ईंधन की कीमतों में गिरावट आई थी, लेकिन सैडेक के सकल घरेलू उत्पाद में ज्यादा गिरावट नहीं आई, जो इस क्षेत्र की वस्तु निर्यातों पर निर्भरता की ओर संकेत करता है। हालांकि कीमतों में 2016 से सुधार आना शुरू हो गया है, तथापि पिछले कुछ वर्षों में इस क्षेत्र की आर्थिक वृद्धि मामूली ही बनी रही। इसकी एक वजह प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का राजस्व हानि के कारण मंदी या ऋण संकट का सामना करना भी है। ओईसीडी देशों जैसे संतृप्त बाजारों से चीन और भारत जैसी उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की ओर विशाखन के बावजूद व्यापार की संरचना लगभग वैसी ही बनी रही, जिसमें प्राथमिक वस्तुओं का 80% निर्यात किया गया, जबकि औद्योगिक उत्पाद और विनिर्मित वस्तुएं बड़ी संख्या में आयात की गईं।

सैडेक देशों की वस्तु निर्भरता

अंकटाड के अनुसार, यदि किसी देश से, कुल मर्चेंडाइज निर्यातों के मूल्य में 60 प्रतिशत से अधिक वस्तु (कमोडिटी) निर्यातों का हिस्सा रहता है तो उस देश को " कमोडिटी-निर्भर" माना जाता है। इस गणना के आधार पर उप-सहारा अफ्रीका दुनिया का सबसे बड़ा कमोडिटी निर्भर क्षेत्र है, जिसमें 89% देश कमोडिटी निर्यातों पर निर्भर हैं। इसके बाद 65% देशों के साथ मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका, पूर्वी एशिया-प्रशांत, लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई क्षेत्र, दक्षिण एशिया और यूरोप तथा मध्य एशिया का स्थान रहा। उत्तरी अमेरिकी देशों को कमोडिटी आत्मनिर्भर पाया गया।

कमोडिटी मूल्य सूचकांकों (कृषि वस्तुओं, खनिजों, धातुओं और अयस्कों और ईंधन सहित सभी समूह) में 1996 से 2018 की अवधि के लिए सैडेक की वार्षिक वृद्धि और वास्तविक जीडीपी वृद्धि के बीच अंकटाड स्टैट डाटा का उपयोग कर निकाला गया को-रिलेशन कोएफिशिएंट औसतन 0.56 रहा। तथापि, सैडेक वार्षिक निर्यात वृद्धि और कमोडिटी कीमतों (सभी समूहों) में वृद्धि पर विचार करें तो उच्चतर को-रिलेशन आता है। यह को-रिलेशन कोएफिशिएंट 0.9 तक चला जाता है, इसलिए यह इस क्षेत्र की कमोडिटी निर्यातों पर निर्भरता को रेखांकित करता है।

जब इसी अवधि के दौरान कमोडिटी मूल्य सूचकांकों की अलग-अलग श्रेणियों पर विचार किया गया तो पाया गया कि कृषि कमोडिटी मूल्य सूचकांकों का को-रिलेशन कोएफिशिएंट सैडेक के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि के साथ 0.5 रहा, जबकि निर्यात वृद्धि के साथ को-रिलेशन कोएफिशिएंट इससे कहीं अधिक 0.86 रहा। इसी तरह, खनिज, अयस्क और धातु मूल्य सूचकांकों का को-रिलेशन कोएफिशिएंट निर्यात वृद्धि के साथ 0.82 रहा, जो सैडेक की - जी डी पी वृद्धि के साथ इसके 0.47 रहे को-रिलेशन कोएफिशिएंट की तुलना में कहीं अधिक रहा। ईंधन मूल्य सूचकांकों की बात की जाए तो सैडेक की जीडीपी वृद्धि के साथ इसका कोरिलेशन कोएफिशिएंट 0.61 रहा, जबकि निर्यात वृद्धि के साथ यह थोड़ा ज्यादा 0.86 रहा। प्राथमिक कमोडिटी मूल्यों में उतार-चढ़ाव को निर्यात राजस्व में होने वाले उतार-चढ़ाव से जोड़कर देखा जा सकता है, जिससे सैडेक देशों की विदेशी मुद्रा आय में अस्थिरता आती है और वृद्धि तथा सुधार दोनों धीमे पड़ जाते हैं।

सैडेक द्वारा विनिर्माण निर्यात एवं मूल्य वर्धन

विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के अनुसार, वैश्विक विनिर्माण वैल्यू एडिशन में अफ्रीका का हिस्सा 1.9% रहा और अफ्रीका के योगदान का लगभग आधा हिस्सा सैडेक क्षेत्र से ही रहा। वस्तुतः मूल्य के संदर्भ में अफ्रीकी आरटीए में सैडेक पहले स्थान पर है। वर्ष 2017 में कुल अफ्रीकी निर्यातों का 37.3% हिस्सा सैडेक से ही रहा। सैडेक से अफ्रीकी महाद्वीप और शेष विश्व को विनिर्माण निर्यात सबसे अधिक रहा। सैडेक क्षेत्र से मुख्य रूप से ईंधन और खनन उत्पादों का निर्यात किया गया।

किसी देश की घरेलू स्थिति और विनिर्माण के मामले में इसकी प्रतिस्पर्धात्मकता को समझने के लिए प्रति निरंतर 2010 यूएस डॉलर व्यक्ति वैल्यू एडेड विनिर्माण मूल्य का विश्लेषण किया जाना चाहिए, जो किसी देश के, चाहे वह कितना भी बड़ा या छोटा हो, विकास के चरणों की तुलना को आसान बनाता है। वर्ष 2017 में प्रति व्यक्ति विनिर्माण वैल्यू एडेड (एमवीए) का वैश्विक औसत 2,027.5 यूएस डॉलर रहा। दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अफ्रीका का प्रति व्यक्ति एमवीए 276.5 यूएस डॉलर के साथ सबसे कम रहा। इसी अवधि के दौरान सैडेक सदस्यों का प्रति व्यक्ति एमवीए औसत 440.4 यूएस डॉलर रहा। सैडेक सदस्य देशों के लिए संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन के प्रतिस्पर्धी औद्योगिक निष्पादन सूचकांक 2019 के विश्लेषण से पता चलता है कि 150 देशों में सैडेक सदस्यों की रैंकिंग 81 से 138 के बीच रही। केवल दक्षिण अफ्रीका ऐसा देश रहा, जो इस सूचकांक में 45वें स्थान पर है। एस्वातिनी का निष्पादन सैडेक देशों में दूसरा सबसे अच्छा रहा, जो 81वें स्थान पर रहा, जबकि मलावी 138वें स्थान पर रहा।

जीवीसी भागीदारी

सैडेक देशों के लिए वैश्विक वैल्यू चेन (जीवीसी) भागीदारी दर का विश्लेषण किया गया। इसमें पता चला कि दूसरे देशों के निर्यात (चार्ट 2) में जुड़े घरेलू वैल्यू एडेड डी.वी.ए. डाउनस्ट्रीम कंपोनेंट कंपोनेंट अधिक हैं। वहीं सैडेक क्षेत्र से ऐसे निर्यातों में विदेशी

वैल्यू एडेड (एफवीए) कंपोनेंट काफी कम हैं, जहां प्राकृतिक संसाधन और कमोडिटी निर्यातों में विदेशी इनपुट बहुत कम है। जीवीसी भागीदारी दर किसी देश के निर्यात के हिस्से को इंगित करती है जो एकाधिक चरणों वाली व्यापार प्रक्रिया का हिस्सा है। इसकी गणना एफवीए और डीवीए के योग के रूप में की जाती है। और आमतौर पर इसे देश के सकल निर्यात (जीवीसी भागीदारी दर) के हिस्सों के रूप में व्यक्त किया जाता है। नीति निर्माताओं की प्रमुख चुनौती किसी विशेष वैल्यू चेन के लिए प्रवेश बिंदुओं को चिह्नित करना और फिर क्षेत्रीय स्तर पर उन्हें एकीकृत करना है।

क्षेत्रीय वैल्यू चेन में सैडेक देशों की भागीदारी मामूली है और मुख्य रूप से सीमित वैल्यू एडिशन के साथ प्राथमिक कमोडिटी, खनिजों, कृषि वस्तुओं के निर्यात के माध्यम से डाउनस्ट्रीम भागीदारी से इसकी विशेषताओं का पता चलता है। इस मामले में एकमात्र अपवाद परिधान और ऑटोमोबाइल वैल्यू चेन है जो दक्षिण अफ्रीका में विकसित हुई है।

सैडेक वैल्यू चेन अनिवार्य रूप से हब और स्पोक मॉडल की है, जिसका केंद्र दक्षिण अफ्रीका है, जहां अग्रणी कंपनियां हैं। यह इस क्षेत्र के भीतर अन्य देशों की भागीदारी को सीमित करता है। कमजोर लॉजिस्टिक्स, अपर्याप्त भौतिक बुनियादी ढांचा और कौशल की कमी क्षेत्रीय और वैश्विक वैल्यू चेन में सैडेक अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण के लिए बाधाओं के रूप में सामने आते हैं।

इसके अलावा बोत्सवाना, लेसोथो, नामीबिया और एस्वातिनी, मॉरीशस और सेशेल्स जैसे देश औद्योगीकरण के सीमित दायरे वाली छोटी अर्थव्यवस्थाएं हैं जो क्लस्टर विकास में एक तरह की बाधा हैं। दूसरी ओर, दक्षिण अफ्रीका, जो अपेक्षाकृत अधिक औद्योगीकृत है और क्षेत्रीय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 50% इसी क्षेत्र का है, असंतुलन पैदा करता है।

सैडेक विनिर्माण में भारत की निवेश संभावनाएं

वित्त मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अनुसार, अप्रैल 1996 से मार्च 2019 के दौरान सैडेक क्षेत्र में भारत का अनुमोदित संचयी निवेश 60.5 अरब यूएस डॉलर रहा। मॉरीशस, मोज़ाम्बिक और दक्षिण अफ्रीका इस क्षेत्र में भारत के शीर्ष निवेश स्थल हैं। अप्रैल 1996 से मार्च 2019 के दौरान अफ्रीका में कुल भारतीय निवेश का लगभग 93.8% सैडेक क्षेत्र में रहा। इसमें भी मुख्य रूप से निवेश मॉरीशस में रहा। 2010-11 से 2018-19 के दौरान सैडेक क्षेत्र में संचयी भारतीय निवेश 51.2 बिलियन यूएस डॉलर का रहा। भारत से सैडेक देशों को अनुमोदित निवेश में सबसे बड़ा हिस्सा विनिर्माण क्षेत्र का रहा, जो सैडेक में हुए कुल निवेश का 42% रहा। इसके बाद वित्तीय, बीमा, रिअल एस्टेट और व्यवसाय सेवाएं (24%), थोक, खुदरा व्यापार, रेस्त्रां और होटल (9%), परिवहन, भंडारण और संचार सेवाएं; और कृषि एवं संबद्ध गतिविधियां दोनों का हिस्सा भारत द्वारा किए गए कुल निवेश का 8-8% रहा। मॉरीशस में मुख्य रूप से ऑफशोर वित्तीय सुविधाओं और अनुकूल कर नीतियों के चलते सबसे अधिक निवेश (98.7%) विनिर्माण क्षेत्र में रहा। विनिर्माण क्षेत्र में भारतीय निवेश प्राप्त करने वाले अन्य सैडेक देशों में वे दक्षिण अफ्रीका (मॉरीशस को संचयी राशि से निकाल दिए जाने पर विनिर्माण में निवेश का 49%), ज़ाम्बिया (20%), तंज़ानिया (16%), बोत्सवाना (7%), जिम्बाब्वे (4%), मलावी, मेडागास्कर, नामीबिया, मोज़ांबिक प्रत्येक का 1-1% हिस्सा रहा।

चार्ट 2 : सैडेक देशों की जीवीसी भागीदारी, 2018

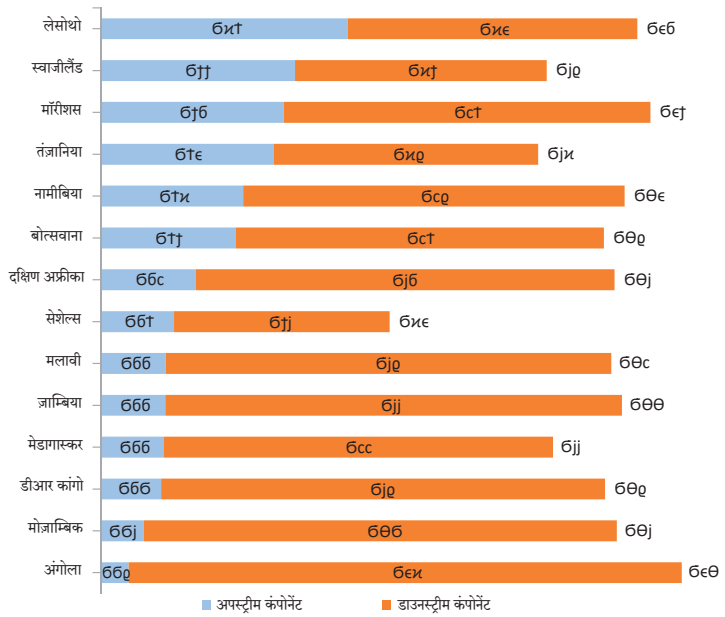

जीवीसी भागीदारी सूचकांक = विदेशी वैल्यू एडेड (एफवीए)/ सकल निर्यात + घरेलू वैल्यू एडेड (डीवीए) / सकल निर्यात

नोटः ज़िम्बाब्वे संबंधी डाटा उपलब्ध नहीं है

स्रोतः अंकटाड- एओरा ग्लोबल वैल्यू चेन डाटाबेस, एक्ज़िम बैंक विश्लेषण

आगे की राह

सैडेक के साथ भारत का व्यवसाय मुख्य रूप से निजी क्षेत्र द्वारा संचालित रहा है, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू बाजार के साथ बेहतर एकीकरण हुआ है। इसलिए सैडेक औद्योगीकरण रणनीति और रोडमैप 2015 - 2063 के अनुरूप, भारतीय निवेशक चुनिंदा विनिर्माण सेक्टरों में निवेश अवसर तलाश सकते हैं। इनमें कृषि प्रसंस्करण, खनिज प्रसंस्करण, फार्मास्यूटिकल्स, वस्त्र और परिधान, चमड़े का सामान और जूते-चप्पल सहित उपभोक्ता वस्तुएं, और ऑटोमोटिव पुर्जे शामिल हैं और इस प्रकार इन क्षेत्रों में निवेश से इस क्षेत्र को वैल्यू चेन में आगे बढ़ने में भी मदद मिलेगी।

एक्ज़िम बैंक ने आबिदजान में मत्स्य उद्योग के विकास में दी सहायता

एक्ज़िम बैंक अपनी मार्केटिंग सलाहकारी सेवाओं के जरिए भारतीय कंपनियों की निर्यात क्षमता और अंतरराष्ट्रीय स्पर्धात्मकता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। एक्ज़िम बैंक, भारतीय कंपनियों के लिए विदेशों में व्यवसाय अवसर तलाशने और उनके वैश्वीकरण प्रयासों में उनकी मदद करता है। इसके लिए बैंक भारतीय कंपनियों के उत्पादों और सेवाओं के लिए विदेशों में वितरक / खरीदार / भागीदार तलाशता है और इसके लिए प्रभार के रूप में एक निश्चित दर पर सफलता शुल्क लेता है। बैंक ने कोत दि'वार आबिदजान के किबोउओ लेक डलाओ शहर में झील वाले मत्स्य उद्योग के विकास में सहायता दी है। यह अपनी तरह की पहली परियोजना है, जिसे बैंक ने अपनी मार्केटिंग सलाहकारी सेवाओं के जरिए सहायता दी है। एफएम इन्वेस्ट एसए, आबिदजान से अनुरोध मिलने पर परियोजना के स्थान का व्यवहार्यता अध्ययन करने के लिए एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत से कुछ योग्य परामर्शदाताओं की एक टीम चिह्नित की गई। इसके बाद विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की गई। परामर्शदाताओं की टीम में एक विशेषज्ञ मत्स्य उद्योग से, आईएसओ सर्टिफिकेशन में विशेषज्ञता रखने वाले एक मार्केटिंग विशेषज्ञ और कृषि आधारित बहुपक्षीय परियोजनाओं में विशद अनुभव रखने वाले एक मिशन लीडर शामिल रहे। इसके बाद एक्ज़िम बैंक के जरिए एफएम इन्वेस्ट एसए, आबिदजान को तकनीकी और वित्तीय प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए। बैंक ने परामर्शदाताओं की आबिदजान यात्रा और परियोजना क्षेत्र के सर्वेक्षण में सहयोग प्रदान किया।

कोत दि'वार पश्चिम अफ्रीकी आर्थिक और मौद्रिक संघ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और इस क्षेत्र के जीडीपी में इसका तिहाई योगदान है। वास्तविक जीडीपी वृद्धि लगभग 8-10% के आसपास रही है। देश का विदेशी कर्ज अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की 'बुरी तरह ऋणग्रस्त गरीब देश' पहल के अंतर्गत काफी कम हो गया। यहां खनन और हाइड्रोकार्बन संसाधन भारी मात्रा में जिनका दोहन नहीं किया गया है और क्षेत्रीय मानकों के लिहाज से तुलनात्मक रूप से अधिक विशाखित उद्योग हैं। कोत दि'वार दुनिया का सबसे बड़ा कोको निर्यातक है और कृषि यहां की आर्थिक वृद्धि का इंजन है। तथापि, देश में गरीबी 1985 में 10% थी, जो 2011 में बढ़कर 51% हो गई। हालांकि 2015 में यह कुछ कम होकर 46% हुई, लेकिन ग्रामीण इलाकों में उच्चतर बनी रही। लगभग 15% ग्रामीण घर खाद्य असुरक्षा का सामना कर रहे हैं। लंबे समय से चले आ रहे गृह युद्ध और 2017 में राजनीतिक अशांति के चलते देश के सामने मध्यम अवधि में मुख्य चुनौती अधिक समावेशी वृद्धि के लक्ष्य को हासिल करना है। मत्स्य उद्योग कोत दि'वार की बड़ी राष्ट्रीय आस्ति जैसा है। यदि इसका सही तरीके से दोहन किया जाए तो आजीविका सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन में बड़ी मदद मिल सकती है।

इसे ध्यान में रखते हुए, परामर्शदाताओं द्वारा किबोउओ लेक क्षेत्र का विस्तृत सर्वेक्षण किया गया। व्यवहार्यता अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत की गई और निम्नलिखित मुख्य उद्देश्यों के साथ परियोजना के पांच वर्षों में पूरा होने का अनुमान लगाया गया: (i) गहन सतत मत्स्यपालन के जरिए किबोउओ लेक के जल संसाधनों को बढ़ाना, (ii) गुणवत्ता मछलियों और मत्स्य उत्पादों के उत्पादन के लिए वाणिज्यिक मत्स्य उद्योग का विकास करना, (iii) कैट फिश के लिए अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) करना। इस अध्ययन में इस झील में मछलियों की तीन प्रजातियां पालने की संस्तुति की गई है- तिलापिया, कैटफिश, और कैपिटेन। परियोजना मिशन मोड में बनाई गई है, जिसमें पांच प्रमुख घटक हैं। इन पांच घटकों में (i) परियोजना प्रबंधन, (ii) बुनियादी ढांचागत विकास, (iii) केज-कल्चर के जरिए मत्स्य उत्पादन सुविधाएं और मत्स्योत्पादन, (iv) मार्केटिंग और (v) परियोजना क्षेत्र के गांवों का सामाजिक विकास शामिल हैं।

पानी की निम्न गुणवत्ता को देखते हुए केज कल्चर में तिलापिया के वर्ष भर उत्पादन के लिए क्रियान्वयन का फोकस गतिविधियों को इस प्रकार प्राथमिकता देना रहेगा कि झील का वातावरण अक्षुण्ण रखा जा सके और साथ में आर्थिक लाभ भी उठाया जा सके। परियोजना में स्थानीय आबादी के लिए मत्स्यपालन पद्धतियों, प्रबंधन और मार्केटिंग में प्रशिक्षण तथा क्षमता विकास मॉड्यूल भी शामिल किए गए हैं।

परियोजना से आसपास के दो गांवों किबोउओ और दिग्बापी के लाभान्वित होने की उम्मीद है। इन गांवों की संयुक्त आबादी 3,994 है। मत्स्यपालन पद्धतियों और प्रबंधन में क्षमता निर्माण के अतिरिक्त, इस परियोजना के जरिए 300 परिवारों को आजीविका में सहयोग मिलने की संभावना है। यह आजीविका बैकयार्ड पोल्ट्री, बकरीपालन और उच्च मूल्यों वाली सब्जी उत्पादन के जरिए मिलेगी। इसके अतिरिक्त, इस परियोजना से गुणवत्ता वाली मछलियों और मत्स्य उत्पादों की आपूर्ति के साथ हर सप्ताह लगभग 20,000 उपभोक्ताओं को लाभ मिलने की उम्मीद है।

व्यवहार्यता अध्ययन में कंपनी को मत्स्य उत्पादों की मार्केटिंग के लिए स्टार होटलों, रेस्त्राओं और सुपर मार्केट्स तक पहुंचने और स्थानीय मत्स्य विक्रेताओं के साथ प्रितस्पर्धा न करने का सुझाव दिया गया है। इस अध्ययन में आबिदजान में विशेष रूप से डिजाइन किए गए कियोस्क के जरिए उच्च वर्ग के उपभोक्ताओं के लिए मीडियम से हाई-टेक प्रसंस्करण यूनिट के विकास का प्रस्ताव भी रखा गया है। यह परियोजना वर्तमान में क्रियान्वयन के चरण में है।

आबिदजान में किबोउओ लेक डलाओ शहर में मत्स्य उद्योग के विकास के लिए एक्ज़िम बैंक द्वारा नामित भारतीय परामर्शदाताओं, एफएम इन्वेस्ट एसए, आबिदजान और एक्ज़िम बैंक के बीच करार पर हस्ताक्षर।

एक्ज़िम बैंक विदेशी वित्तीय संस्थाओं, क्षेत्रीय विकास बैंकों, संप्रभु सरकारों और अन्य विदेशी संस्थाओं को ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान करता है, जो उन देशों के क्रेताओं को भारत से आस्थगित भुगतान शर्तों पर विकासपरक तथा बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं, उपकरण, माल एवं सेवाओं का आयात करने में समर्थ बनाती हैं। एक्ज़िम बैंक भारत सरकार के आदेश पर भी ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान करता है। इनके अंतर्गत एक्ज़िम बैंक माल के शिपमेंट पर भारतीय निर्यातक को संविदा मूल्य के 100 प्रतिशत की प्रतिपूर्ति करता है, बशर्ते कि कुल संविदा मूल्य के कम से कम 75 प्रतिशत के माल एवं सेवाओं का शिपमेंट भारत से किया गया हो। ऋण–व्यवस्थाओं के जरिए उभरते बाजारों में भारत की परियोजना निष्पादन क्षमता के प्रदर्शन में भी मदद मिली है। हाल के वर्षों में ऋण–व्यवस्थाओं ने गति पकड़ी है। विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशियानिया और सीआईएस क्षेत्रों में सबसे ज्यादा ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की गई हैं। बैंक द्वारा अब तक अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशिनिया और सीआईएस क्षेत्रों के 62 देशों को 25.4 बिलियन यूएस डॉलर की ऋण प्रतिबद्धता के साथ 259 ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं, जो भारत से निर्यातों के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण–व्यवस्थाएं विकासशील देशों में भारत से परियोजनाओं, माल और सेवाओं के निर्यात के संवर्द्धन और सुगमीकरण के लिए प्रभावी साधन हैं।

एक्ज़िम बैंक ने अक्टूबर–दिसंबर 2019 के दौरान भारत सरकार की ओर से निम्नलिखित तीन ऋण–व्यवस्थाओं पर हस्ताक्षर किए:

(i) मंगोलिया सरकार को 236 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण–व्यवस्था प्रदान की गई। यह ऋण–व्यवस्था पेट्रोकेमिकल रिफाइनरी परियोजना के लिए प्रदान की गई है। इसके साथ ही, एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से मंगोलिया सरकार को अब तक 1,256 मिलियन यूएस डॉलर की कुल तीन ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। ये ऋण–व्यवस्थाएं मंगोलिया सरकार को सूचना प्रौद्योगिकी परियोजनाओं और पेट्रोकेमिकल रिफाइनरी परियोजना के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई हैं।

(ii) सिएरा लिओन सरकार को 30 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण–व्यवस्था प्रदान की गई। यह ऋण–व्यवस्था सिएरा लिओन में भूमि एवं बुनियादी ढांचागत विकास के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई है, जिसमें हाइड्रोलिक्स, जल प्रबंधन (सिंचाई) प्रणाली और सिएरा लिओन में ट्रैक्टरों की व्यवस्था करने संबंधी परियोजनाएं शामिल हैं। इस ऋण–व्यवस्था के साथ, एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से सिएरा लिओन सरकार को अब तक 153 मिलियन यूएस डॉलर की कुल चार ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। ये ऋण–व्यवस्थाएं सिएरा लिओन सरकार को विद्युत, कृषि और पेयजल संबंधी परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई हैं।

(iii) गिनी गणराज्य सरकार को सौर परियोजनाओं के लिए 20.22 मिलियन यूएस डॉलर और ग्रैंड कोनाक्री–हराइजन 2040 की पेयजल आपूर्ति व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए 170 मिलियन यूएस डॉलर की दो ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की गईं। इस ऋण–व्यवस्था के साथ ही, एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से गिनी गणराज्य सरकार को अब तक 225.2 मिलियन यूएस डॉलर की कुल तीन ऋण–व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। ये ऋण–व्यवस्थाएं गिनी गणराज्य सरकार को मातृ एवं शिशु अस्पतालों के निर्माण और उन्नयन, सौर परियोजनाओं और गिनी में पेयजल आपूर्ति संबंधी परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए प्रदान की गई हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

श्री सुदत्त मंडल,
मुख्य महाप्रबंधक,
भारतीय निर्यात–आयात बैंक,
ऑफिस ब्लॉक, टावर 1, 7वीं मंजिल
एड्जेसेंट रिंग रोड
किदवई नगर (पूर्व)
नई दिल्ली – 110023
टेलीफोनः (011) 24607700
ई–मेल : eximloc@eximbankindia.in

गिनी गणराज्य सरकार के माननीय विदेश मंत्री श्री मामदी टोरे के साथ नई दिल्ली में 05 दिसंबर, 2019 को ऋण–व्यवस्था करार का आदान–प्रदान करते भारतीय निर्यात–आयात बैंक के मुख्य महाप्रबंधक श्री सुदत्त मंडल। इस अवसर पर भारत के माननीय विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सैडेक क्षेत्र में वस्तु निर्भरता कम करने के लिए मूल्य श्रृंखला का उन्नयन जरूरी: एक्ज़िम बैंक

एक्ज़िम बैंक ने सैडेक क्षेत्र में वर्तमान व्यापार और वस्तु निर्यातों का विश्लेषणपरक शोध अध्ययन प्रकाशित किया है। सैडेक देशों के लिए वैश्विक मूल्य श्रृंखला (जीवीसी) में भागीदारी दर अन्य देशों के निर्यातों में निहित घरेलू मूल्य वर्धन (डीवीए) को रेखांकित करती है। इस संबंध में, इस शोध अध्ययन का उद्देश्य इस क्षेत्र को वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित करने और इस प्रक्रिया में सैडेक क्षेत्र के प्रमुख संभावित विनिर्माण क्षेत्रों में भारत के सहयोग की संभावनाओं को हाइलाइट करना है।

लुसाका, ज़ाम्बिया में 14 अक्टूबर, 2019 को आयोजित भारत और दक्षिण अफ्रीका पर सीआईआई-एक्ज़िम बैंक रीजनल कॉन्क्लेव के दौरान एक्ज़िम बैंक के प्रकाशन 'सैडेक में विनिर्माण - मूल्य श्रृंखला का उन्नयन' का विमोचन ज़ाम्बिया के माननीय राष्ट्रपति श्री एडगर चाग्वा लुंगू द्वारा किया गया। इस अवसर पर भारत के माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन, ज़ाम्बिया के माननीय वाणिज्य, व्यापार और उद्योग मंत्री श्री क्रिस्टोफर यालुमा, ज़ाम्बिया चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष डॉ. चबुका कवेशा, सीआईआई-अफ्रीका समिति के सह-अध्यक्ष और शापूरजी पाल्लोनजी समूह के निदेशक श्री एस कुप्पुस्वामी, भारतीय निर्यात-आयात बैंक के महाप्रबंधक श्री मुकुल सरकार विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मेकोंग क्षेत्र विकास बॉन्ड (एसआर बॉन्ड) के रूप में एक्ज़िम बैंक को मिला संसाधनों का नया स्रोत: 3 साल के लिए 50 मिलियन डॉलर के सामाजिक उत्तरदायित्व वाले बॉन्ड के साथ की शुरुआत

एक्ज़िम बैंक ने यूएस डॉलर में 50 मिलियन यूएस डॉलर का पहला एसआर बॉन्ड जारी किया। यह बॉन्ड इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक्ज़िम बैंक का पहला बॉन्ड है, जिसे समाज कल्याण संबंधी निवेश के विकल्प तलाशने वाले निवेशकों तक पहुंचने के लिए जारी किया गया है। समाज कल्याण या सामाजिक उत्तरदायित्व वाले निवेशों को हरित निवेश अथवा एथिकल निवेशों के रूप में भी जाना जाता है। ये ऐसे निवेश होते हैं, जिनमें पर्यावरण और लोगों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले उद्योगों में निवेश करने से बचा जाता है। सामाजिक परियोजनाओं में ऐसी परियोजनाएं, गतिविधियां और निवेश शामिल होते हैं, जो किसी विशिष्ट सामाजिक मुद्दे से संबंधित होते हैं और / अथवा उनसे सकारात्मक सामाजिक परिणाम प्राप्त किया जा सकता है। इस बॉन्ड से जुटाई गई निधियों को मेकोंग क्षेत्र में बुनियादी ढांचागत विकास परियोजनाओं में लगाया जाएगा। इस बॉन्ड को एसआर मेकोंग क्षेत्र विकास बॉन्ड नाम दिया गया है, जिसमें कंबोडिया, म्यांमार और वियतनाम की परियोजनाएं शामिल होंगी। 50 मिलियन यूएस डॉलर का एसआर बॉन्ड तीन साल के लिए 2.385% प्रति वर्ष की फिक्स दर पर जारी किया गया है। इस ऑफरिंग के लिए स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक ने व्यवस्थापक (अरेंजर) के रूप में काम किया। बैंक के ग्लोबल मीडियम टर्म नोट कार्यक्रम के अंतर्गत प्राइवेट प्लेसमेंट फॉर्मैट में यह पहला बॉन्ड है, जिससे बैंक के लिए नया निवेशक पोर्टफोलियो बनाने में मदद मिलेगी। इस बॉन्ड को दाईचि लाइफ इंश्योरैंस कंपनी लिमिटेड के साथ अलग से प्लेस किया गया है। यह जापान की पहली म्युचुअल कंपनी है और बीमा उत्पाद तथा सेवाएं प्रदान करती है।

ब्रिक्स देशों के अन्य सदस्य विकास बैंकों के साथ भारतीय एक्ज़िम बैंक ने बुनियादी ढांचे में निजी निवेश जुटाने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए

एक्ज़िम बैंक के प्रबंध निदेशक श्री डेविड रस्कीना ने बुनियादी ढांचे में संयुक्त रूप से निजी निवेश जुटाने के इरादे से ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) राष्ट्रों के अन्य सदस्य विकास बैंकों के प्रतिनिधिमंडलों के प्रमुख के साथ एक बहुपक्षीय सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू पर ब्रिक्स इंटरबैंक सहयोग तंत्र के तत्वावधान में आयोजित वार्षिक वित्तीय मंच के दौरान हस्ताक्षर किए गए।

यह समझौता ज्ञापन ब्रिक्स अंतरबैंक सहयोग तंत्र के तहत सहयोग को मजबूत करने के उद्देश्य से सदस्य विकास बैंकों द्वारा अपनी वार्षिक बैठक के दौरान हुई चर्चाओं का परिणाम था। इस व्यापक समझौते के तहत, हस्ताक्षरकर्ताओं ने बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में निजी निवेश के वित्तपोषण, सह-वित्तपोषण या गारंटी की संभावनाओं का पता लगाने पर सहमति व्यक्त की है। इस व्यवस्था के तहत ब्रिक्स देशों के विकास बैंक एक कार्यदल स्थापित करने पर सहमत हो गए हैं जो निजी निवेश जुटाने हेतु साझा हित की परियोजनाओं की पहचान करने के लिए प्रारंभिक अनुसंधान करेगा। कार्य दल वित्तीय समाधानों की उपलब्धता, नियामक और कानूनी नवाचारों, उपयुक्त पीपीपी मॉडलों की पहचान और बोली प्रक्रियाओं का भी पता लगाएगा।

भारत से परियोजना निर्यातों को बढ़ाने के लिए निर्यात ऋण एजेंसियों को सुदृढ़ करना जरूरी: एक्ज़िम बैंक शोध अध्ययन

पिछले एक दशक के दौरान, वस्तु निर्यातों में मंदी को देखते हुए भारत से निर्यातों को बढ़ाने के लिए नए क्षेत्रों का रुख करने की जरूरत है। एक्ज़िम बैंक के एक शोध अध्ययन के अनुसार, परियोजना निर्यात भारत के लिए ऐसा ही एक क्षेत्र है, जिस पर फोकस कर भारत से निर्यातों को बढ़ाया जा सकता है। अध्ययन में किए गए विश्लेषण से पता चलता है कि विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक (एडीबी), अफ्रीकी विकास बैंक (एएफडीबी), अंतर-अमेरिकी विकास बैंक तथा यूरोपीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक जैसे बहुपक्षीय विकास बैंकों द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं में वर्ष 2014-2018 के दौरान 155.7 अरब यूएस डॉलर के कॉन्ट्रैक्ट दिए गए। यह आंकड़ा भारत में परियोजना निर्यातकों के लिए उपलब्ध अपार अवसरों की ओर संकेत करता है। इस अवधि के दौरान प्रमुख बहुपक्षीय विकास बैंकों- एडीबी, एएफडीबी और विश्व बैंक, द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों ने 21 बिलियन यूएस डॉलर के कॉन्ट्रैक्ट हासिल किए।

'भारत से परियोजना निर्यात: प्रोत्साहन और संवर्धन के लिए रणनीति' शीर्षक वाले इस शोध अध्ययन का विमोचन माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री, भारत सरकार, श्री पीयूष गोयल द्वारा किया गया। इस शोध अध्ययन का विमोचन नई दिल्ली में भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) द्वारा 8-9 दिसंबर, 2019 को 'परियोजना निर्यातों को बढ़ाने के लिए रोडमैप' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के दौरान किया गया। सेमिनार के वक्ताओं में एक्ज़िम बैंक, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं और परियोजना निर्यातक कंपनियों के प्रतिनिधि शामिल रहे। सेमिनार में भारतीय कारोबारी समुदाय तथा विभिन्न देशों के भारतीय मिशनों से 150 से अधिक प्रतिभागी शामिल रहे।

एक्ज़िम बैंक ने 'बिहार से निर्यातों का संवर्धन' विषय पर 18 नवंबर, 2019 को बिहार की राजधानी पटना में एक चर्चापरक सेमिनार आयोजित किया। इसका उद्देश्य राज्य में निहित निर्यात संभावनाओं और निर्यात अवसरों के बारे में निर्यातकों की जागरूकता बढ़ाना तथा बिहार से निर्यातों को बढ़ाने और निर्यात संभावनाओं को भुनाने के लिए निर्यात रणनीति बनाने में सहयोग करना था। सेमिनार में बिहार के उद्योग जगत से आए लोगों ने हिस्सा लिया और एक्ज़िम बैंक, राज्य सरकार, फिओ तथा डीजीएफटी के अधिकारी वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर एक्ज़िम बैंक ने 'बिहार से निर्यातों का संवर्धन विश्लेषण एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य' शीर्षक वाले अपने कार्यकारी आलेख का विमोचन किया। इस अध्ययन में बिहार की आर्थिक प्रोफाइल तथा राज्य से निर्यातों की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है और राज्य स्तर पर निर्यातों के लिए बेहतर परिवेश बनाने की रणनीतियां सुझाई गई हैं।

हस्तशिल्प और ग्रासरूट सेक्टर को सहयोग के लिए एक्ज़िम बैंक, हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के साथ मिलकर निर्यात दस्तावेजीकरण और मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में ग्रामीण दस्तकारों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करता है। तिमाही के दौरान सागर (कर्नाटक) और पुद्दुचेरी में ऐसी दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

एक्ज़िम बैंक ने 8-9 दिसंबर, 2019 को नई दिल्ली में 'परियोजना निर्यातों को बढ़ाने के लिए रोडमैप' विषय पर दो दिवसीय सेमिनार आयोजित किया। इस सेमिनार के वक्ताओं में एक्ज़िम बैंक, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं और परियोजना निर्यातक कंपनियों के प्रतिनिधि शामिल रहे। सेमिनार में भारतीय कारोबारी समुदाय तथा विभिन्न देशों के भारतीय मिशनों से 150 से अधिक प्रतिभागी शामिल रहे। माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री, भारत सरकार, श्री पीयूष गोयल सेमिनार के अंतिम वक्ता रहे और उन्होंने 'भारत से परियोजना निर्यातः प्रोत्साहन और संवर्धन के लिए रणनीति' शीर्षक वाले एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन का विमोचन किया।

एक्ज़िम बैंक ने 'बढ़ता व्यापार संरक्षणवादः कारण और प्रभाव' विषय पर एक मास्टर क्लास का आयोजन किया। इसके वक्ता इंदिरा गांधी विकास अनुसंधान संस्थान, मुंबई के प्रोफेसर सी. वीरामणि रहे। उनके साथ एक्ज़िम बैंक के अर्थशास्त्रियों ने यह वेबिनार प्रस्तुत किया।

एक्ज़िम बैंक ने अक्टूबर 2019 के दौरान मुंबई के शारदोत्सव में हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की प्रदर्शनी के लिए दिया सहयोग

एक्ज़िम बैंक अपने ग्रासरूट उद्यम विकास और मार्केटिंग सलाहकारी सेवाएं कार्यक्रमों के जरिए दस्तकारों, मास्टर कारीगरों, बुनकरों, क्लस्टरों, स्वयं सहायता समूहों, गैर सरकारी संगठनों, ग्रासरूट और सूक्ष्म उद्यमों को क्षमता विकास के जरिए सशक्त बनाता है और भारत तथा विदेश में आयोजित होने वाले व्यापार मेलों एवं प्रदर्शनियों में हिस्सा लेने में उनकी सहायता करता है। उदाहरण के लिए मुंबई, नई दिल्ली, पुणे, हैदराबाद, बेंगलूरु, हरियाणा, चेन्नै और कोलकाता जैसे मेट्रो शहरों में हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के होम एक्सपो, सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की प्रदर्शनी, कालाघोड़ा कला महोत्सव, सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला, परंपरागत कला प्रदर्शनियों आदि में हिस्सा लेने में सहायता करता है। एक्ज़िम बैंक ग्रासरूट स्तर के उद्यमों और शिल्पकारों को भी उत्पाद विकास कार्यशालाओं, कौशल विकास प्रशिक्षणों का आयोजन कर तथा उनके उत्पादों को स्थानीय और विदेशी बाजारों में पहुंचाते हुए सहायता प्रदान करता रहा है। क्षमता विकास करने और परिचालनों को किफायती बनाने के लिए कॉमन सुविधा केंद्रों की स्थापना करने में सहायता करता है। साथ ही ई-कॉमर्स प्रौद्योगिकी के जरिए बिक्री के चैनल कम करने और मार्केटिंग में सहायता जैसी पहलों के जरिए दस्तकारों को सहयोग प्रदान करता रहा है। इन प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए बैंक ने सितंबर 2017 में एक्ज़िम बाज़ार शुरू किया था, जो हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की अनूठी प्रदर्शनी है। इसके जरिए शिल्पकारों को अपने उत्पादों की सीधे बिक्री के साथ-साथ भविष्य के लिए ऑर्डर हासिल करने में भी मदद मिलती है। अब तक बैंक देशभर में ऐसे 5 बाज़ारों का आयोजन कर चुका है।

बैंक ने मुंबई में हर साल अक्टूबर के दौरान मनाए जाने वाले चार दिवसीय शारदोत्सव के लिए सहयोग प्रदान किया। यह महोत्सव 4-7 अक्टूबर, 2019 के दौरान हुआ। इसका आयोजन मुंबई में विभिन्न गैर सरकारी संगठनों, ट्रस्टों और सोसायटियों ने मिलकर किया। मुंबई में जहां-जहां यह महोत्सव होता है, वहां यह 1700 से 10,000 वर्ग फीट तक के क्षेत्र में होता है। क्षेत्र का आकार स्थान और वहां आने वाले लोगों पर निर्भर करता है। सामान्य रूप से इसमें आने वाले लोगों की संख्या 20 हजार से 1 लाख तक होती है। इनमें स्थानीय निवासी और विदेशी दोनों होते हैं। यह महोत्सव हस्तशिल्पकारों को अपने उत्पादों को सीधे लोगों तक पहुंचाने का मंच प्रदान करता है। महोत्सव के दौरान टेक्सटाइल्स की बड़ी रेंज, पेंटिंग, लकड़ी की नक्काशी, आइवरी काम, पॉटरी, टेराकोटा, स्टोनवर्क, लाक का काम, बेंत और बांस, घास के उत्पाद, दरी और कालीन, धातु की वस्तुएं प्रदर्शित की जाती हैं। इस दौरान प्रदर्शनी में महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और पश्चिम बंगाल से 7 पारंपरिक कलाओं के हस्तनिर्मित उत्पाद रखे गए। इस प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया और दस्तकारों को अपने उत्पादों की अच्छी बिक्री करने का अवसर मिला। कई दस्तकारों को भविष्य के लिए थोक में बड़े ऑर्डर भी मिले। अलग-अलग उत्पादों के अनुसार, प्रत्येक स्टॉल से 2 लाख से तीन लाख रुपये प्रतिदिन की बिक्री हुई।

विकासशील देशों में शिक्षा और संस्थानों पर आलेख

एक्ज़िम बैंक ने 2016 में ब्रिक्स आर्थिक शोध वार्षिक पुरस्कार शुरू किया था। इस पुरस्कार का उद्देश्य ब्रिक्स सदस्य देशों के नागरिकों द्वारा अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, व्यापार, विकास, वित्त और संबंधित वित्तपोषण में डॉक्टोरल शोध में तेजी लाना और उसे बढ़ावा देना है। इस पुरस्कार के अंतर्गत 15 लाख रुपये की पुरस्कार राशि (लगभग 22,000 यूएस डॉलर समतुल्य राशि), एक पदक और एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। ब्रिक्स पुरस्कार 2019 के विजेता डॉ. तुषार भारती की पुरस्कृत थीसिस पर आधारित एक्ज़िम बैंक का शोध अध्ययन है– विकासशील देशों में शिक्षा और संस्थानों पर आलेख। डॉ. तुषार यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया बिजनेस स्कूल, ऑस्ट्रेलिया में अर्थशास्त्र के असिस्टैंट प्रोफेसर हैं।

आज के समय में दुनिया के विकासशील क्षेत्रों की आर्थिक वृद्धि के विस्तार के लिए मानव पूँजी के संचयन को महत्त्वपूर्ण माना गया है। अब उच्चतर स्तरों की मानव पूँजी बेहतर संस्थागत बुनियादी ढांचे से जुड़ी है और यह बुनियादी ढांचा जरूरी भी है। अधिकांश विकासशील देशों में शिक्षा में भारी निवेश के बावजूद शैक्षिक उपलब्धियों की स्थिति जस की तस बनी हुई है। इस शोध अध्ययन में विकासशील देशों में शिक्षा की मांग को प्रभावित करने वाले कारकों और राजनीतिक संस्थानों के आकार लेने में शिक्षा तथा सूचनाओं की भूमिका की पड़ताल की गई है। यह पड़ताल इस बात को ध्यान में रखते हुए की गई है कि शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार के लिए लक्षित नीतियों को लागू करने में इन्हीं संस्थानों की अधिक भूमिका होगी।

अध्ययन में इस बात की भी पड़ताल की गई है कि स्कूलों तक पहुंच बढ़ने से लोगों को बचपन में लगे झटकों से उबरने में किस हद तक मदद मिली। इसके लिए एक इंडोनेशियाई प्राथमिक विद्यालय निर्माण कार्यक्रम के दौरान आए अंतर का अध्ययन किया गया। इंडोनेशिया सरकार ने स्कूलों में नामांकन बढ़ाने के लिए 1973 में यह कार्यक्रम चलाया था। अध्ययन में पाया गया कि जिन व्यक्ति ने अपने जीवन के पहले साल में कम वर्षा देखी, लेकिन बाद में विद्यालय निर्माण कार्यक्रम का हिस्सा बने, वे बचपन में आई शिक्षा की कमी से पूरी तरह उबरने में कामयाब हो गए। लेकिन जिन व्यक्तियों ने किसी प्रकार की विपरीत वर्षा स्थिति का सामना नहीं किया, उन पर विद्यालय निर्माण कार्यक्रम का कोई असर नहीं पड़ा। यह आंशिक रूप से, स्कूल की गिरती गुणवत्ता और माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश पाने की प्रतिस्पर्धा का नतीजा था, जिसने उच्च वर्षा देखने वाले व्यक्तियों को अलग ढंग से प्रभावित किया।

अध्ययन में, तंज़ानिया में दो लोक नीति कार्यक्रमों के संयुक्त प्रभाव की भी पड़ताल की गई है। आयोडीन सप्लीमेंटेशन कार्यक्रम (आईएसपी) और प्राथमिक शिक्षा विकास कार्यक्रम (पीईडीपी)। इसमें पाया गया कि जो गर्भावस्था से ही आयोडीन सप्लीमेंटेशन का हिस्सा रहे, किन्तु जिन्हें पीईडीपी के अंतर्गत स्कूल फीस माफी का लाभ नहीं मिला, उनकी स्कूली शिक्षा देर से प्रारंभ हुई। इस प्रकार, सर्वेक्षण होने के समय तक उन्होंने उन लोगों की तुलना में स्कूल में कम समय बिताया, जिन्हें सप्लीमेंटेशन या फीस माफी का लाभ नहीं मिला। ऐसे लोग जिन्हें आयोडीन सप्लीमेंटेशन नहीं मिला, किन्तु फीस माफी का लाभ मिला, उनकी स्कूली शिक्षा पहले शुरू हो गई और उन्होंने दूसरे समूह की तुलना में स्कूल में अधिक समय बिताया। ऐसे लोग जिन्होंने इन दोनों योजनाओं का लाभ उठाया, उनकी स्कूली शिक्षा सबसे बाद में शुरू हुई और सर्वेक्षण होने के समय तक उन्होंने स्कूल में सबसे कम समय बिताया। दोनों नीतियों के प्रभाव और स्कूली शिक्षा पूरी करने तथा प्राथमिक शिक्षा शुरू करने के दिनों के बारे में उनसे चर्चा के अनुपात का इस्तेमाल करते हुए अध्ययन में बताया गया है कि आईएसपी का हिस्सा रहे लोग स्कूली शिक्षा पूरी करने के लिए स्कूल में एक साल अतिरिक्त रहने वाले अधिक प्रोडक्टिव रहे। यह स्कूली शिक्षा के वर्षों और आयोडीन सप्लीमेंटेशन के बीच पूरक संबंधों को दर्शाता है। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि आईएसपी का हिस्सा रहे लोगों के स्कूलों में नामांकन में देरी उनके खराब स्वास्थ्य और स्कूल में दाखिले से पहले काम करने की उच्चतर संभावनाओं के चलते हुई।

उपर्युक्त विश्लेषण शिक्षा के संवर्धन के लिए नीतिगत उपाय का उदाहरण है। राजनीतिक संस्थानों की गुणवत्ता इन नीतियों के क्रियान्वयन को प्रभावित कर सकती है। इस प्रकार की नीतियों के क्रियान्वयन के लिए निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की अहम भूमिका निभा सकते हैं। यहां एक दिलचस्प सवाल उठता है कि लोग अक्षम जनप्रतिनिधि क्यों चुनते हैं। इस प्रकार, यह अध्ययन अक्षम जनप्रतिनिधियों के निर्वाचन में को-एथनिक वोटिंग की भूमिका की भी पड़ताल करता है, जो इस प्रकार की नीतियों को ही कथित रूप से खोखला कर देते हैं। अध्ययन बताता है कि किसी पार्टी द्वारा जातीयता के आधार पर उम्मीदवार खड़े करना उस क्षेत्र के मतदाताओं के जातीय संघटन और दूसरे प्रतिद्वंद्वी प्रत्याशी की जातीयता पर निर्भर करता है। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि पार्टियां उम्मीदवार की क्षमताओं को शिक्षा, विधायी अनुभव आदि के आधार पर देखती ही नहीं हैं। परिणामतः अक्षम उम्मीदवार निर्वाचित होकर सदन तक पहुंच जाते हैं।

अध्ययन में इस बात की पुष्टि की गई है कि परिवार, स्कूली शिक्षा की लागत और उसके लाभ दोनों में होने वाले परिवर्तनों की प्रतिक्रिया देते हैं। उच्चतर शिक्षा से हमेशा जरूरी नहीं कि व्यक्ति की आय भी अधिक हो, क्योंकि शिक्षा की निम्न गुणवत्ता या स्थानीय अर्थव्यवस्था में शिक्षा में निम्न रिटर्न का रहना भी इसमें एक फैक्टर होता है। तथापि, दीर्घावधि की दृष्टि से बेहतर संस्थानों के निर्माण के रूप में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के गैर-आर्थिक लाभ अवश्य हो सकते हैं। संस्थान बेहतर होंगे तो सरकारी नीतियों में भी सुधार आएगा और समग्र जनकल्याण में योगदान बढ़ेगा। इसलिए, इस प्रकार की शिक्षा नीतियों के लागत-लाभ विश्लेषण में इन नीतियों के लंबी अवधि में मिलने वाले नतीजों पर विचार अवश्य किया जाना चाहिए।

घाना

वर्ष 2019 के दौरान घाना की आर्थिक वृद्धि दर 6.4% रहने की उम्मीद है। हालांकि 2020 में घाना की जीडीपी वृद्धि दर 5.5% रहने के आसार हैं। घाना की आर्थिक वृद्धि का मुख्य आधार हाइड्रोकार्बन सेक्टर है। कच्चे तेल की वैश्विक कीमतों में गिरावट के प्रभाव को कम करने के लिए तेल और गैस उत्पादन बढ़ाया जा रहा है। हाइड्रोकार्बन सेक्टर में वृद्धि से होने वाली बढ़ोत्तरी से औद्योगिक उत्पादन, बुनियादी ढांचागत निवेश और सहायक सेवाओं में भी थोड़ा विस्तार होगा। नए संसाधनों के विकास से तेल और गैस उत्पादन में होने वाली बढ़ोत्तरी से वर्ष 2021-24 में जीडीपी वृद्धि दर औसतन 6.4% रहने के आसार हैं। वर्ष 2021-23 के दौरन वैश्विक तेल कीमतें बढ़ने से वृद्धि दर उच्च रहेगी, जो 2024 में भी जारी रहेगी। वार्षिक औसत उपभोक्ता मूल्य महंगाई दर वर्ष 2018 की 10.1% की तुलना में कुछ कम होकर वर्ष 2020 में 8.1% रहने की उम्मीद है। घाना की मुद्रा सेडी 2018 के 1 यूएस डॉलर के मुकाबले 4.58 सेडी से गिरकर 2020 में 1 यूएस डॉलर के मुकाबले 4.58 सेडी रहने के आसार हैं। घाना से सोने और तेल के निर्यात में बढ़ोत्तरी के परिणामस्वरूप चालू खाता 2020-24 के दौरान जीडीपी के औसतन 1.4% के साथ सरप्लस रहने का पूर्वानुमान है।

म्यांमार

म्यांमार की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर वर्ष 2019 में औसतन 6.6% रहने और 2020-24 के दौरान औसतन 6.7% रहने की उम्मीद है, जो आसियान देशों में सर्वाधिक वृद्धि दर होगी। जीडीपी के विस्तार में घरेलू मांग का सबसे अधिक योगदान होगा। वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में वृद्धि और बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के लिए घरेलू औद्योगिक क्षमता के अभाव में औद्योगिक आयातों में भी तेजी आएगी। परिणामतः म्यांमार का चालू खाता घाटा 2020 में जीडीपी के 4% से बढ़कर 2023 में जीडीपी का 5.3% होने के आसार हैं। इससे म्यांमार की मुद्रा क्यात पर भी असर पड़ेगा और वर्ष 2020 में इसके एक यूएस डॉलर के मुकाबले औसतन 1,570 क्यात से गिरकर 2024 में 1 यूएस डॉलर के मुकाबले 1,705 क्यात होने की आशंका है। चालू खाता बढ़ने, मुद्रा के मूल्य में गिरावट और घरेलू मांग के दबावों के चलते महंगाई बढ़ेगी। इसलिए 2020-24 में उपभोक्ता मूल्यों में औसतन 7.6% की बढ़ोत्तरी होने की संभावना है।

सूरीनाम

सूरीनाम की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 2019 में 2.2% आंकी गई और यह वृद्धि मुख्यतः मई 2020 में होने वाले चुनावों से पहले सरकारी खर्च के चलते रही। वैसे, नई खनन परियोजनाओं के चलते उच्चतर निर्यात और उच्चतर निजी निवेश वृद्धि के अन्य प्रमुख कारकों में शामिल है। आपूर्ति के लिहाज से देखा जाए तो कृषि, विनिर्माण, ऊर्जा और सोने के खनन जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ने से आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। सरकारी खपत, निवेश और स्वर्ण निर्यात बढ़ने से वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 2019 में 2.2% के स्तर से बढ़कर 2020 में 2.5% हो जाने की उम्मीद है। आने वाले वर्षों में महंगाई दर स्थिर बने रहने की उम्मीद है। वर्ष 2018 में यह 7.1% थी, जो 2019 में गिरकर 4.2% हो गई। सितंबर 2016 में 77% के स्तर पर पहुंचने के बाद यह उल्लेखनीय गिरावट है, जिसके बाद मुद्रा का भी अवमूल्यन हुआ था। तेल और सोने की कीमतों में तिहरी गिरावट और बॉक्साइट उत्पादन बंद होने के चलते वर्ष 2015-16 में अवमूल्यन के बाद मुद्रा में स्थिरता आई। बाहरी सेक्टर में सुधार के बाद मुद्रा विनिमय दर 2019 में 1 यूएस डॉलर के मुकाबले 7.46 सूरीनाम डॉलर रही। चालू खाता शेष 2019 में मामूली घाटे के साथ जीडीपी के 0.1% आंका गया है, जिसके 2020-21 में जीडीपी के औसतन 1.1% सरप्लस में तब्दील होने की उम्मीद है। नई स्वर्ण-खनन क्षमता बढ़ने और स्टाटसोली ऑयल रिफाइनरी में बढ़ी गतिविधि से रिफाइंड ईंधन के आयात की जरूरत कम हुई है, इससे व्यापार सरप्लस होगा, किन्तु अर्थव्यवस्था में सुधार से आयात मांग बढ़ने और अधिक स्थिर विनिमय दर के चलते इसमें थोड़ी गिरावट की भी आशंका है।

रूस

रूस की जीडीपी वृद्धि दर वर्ष 2019 में 1.1% आंकी गई, जो वर्ष 2018 में 2.2% रही थी। इसका प्रमुख कारण वैट में बढ़ोत्तरी के चलते परिवारों का अपने खर्च में कटौती करना रहा। 2018 फीफा विश्व कप से जुड़ी प्रमुख बुनियादी ढांचागत परियोजनाएं अब पूरी हो चुकी हैं, इसलिए निवेश भी कम रहा। राष्ट्रीय परियोजनाओं का क्रियान्वयन धीमा पड़ना और तेल की कीमतों में गिरावट एक अन्य कारण रहा। लेकिन 2020 के ड्राफ्ट फेडरल बजट में राष्ट्रीय परियोजनाओं को चालू करने को प्राथमिकता दी गई है। इससे औद्योगिक और निर्माण क्षेत्रों में गतिविधियां बढ़ेंगी और इस प्रकार, वर्ष 2020 में वृद्धि दर बढ़कर 1.6% रहने की संभावना है। अक्टूबर 2019 में सेंट्रल बैंक ऑफ रशिया (सीबीआर) द्वारा सख्त विवेकपूर्ण मानदंड निर्धारित करने के चलते वर्ष 2020 में भी घरेलू खपत बढ़ने की उमीद कम है। हालांकि इससे अप्रतिभूतित ऋणों में कमी आने की संभावना है। रूस को 2015 के अंत से मध्य 2018 के बीच मुद्रा अवस्फीति का सामना करना पड़ा है। तथापि, मध्य 2018 के बाद से मुद्रास्फीति दर बढ़ी है और 2019 में इसके 4.5% रहने की संभावना है, जो सीबीआर के 4% के लक्ष्य से कुछ अधिक है। वर्ष 2018 में रूबल की कीमत 1 यूएस डॉलर के मुकाबले गिरकर 62.7 रूबल हो गई थी, जो 2017 में 58.3 रूबल थी। इसकी मुख्य वजह अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंध और सरकार की वित्तीय नीति रही, जिसके चलते बढ़ती तेल कीमतों के बावजूद रूबल में मजबूती नहीं आ पाई। उच्चतर तेल कीमतें, स्थित चालू खाता आवक, अग्रणी केंद्रीय बैंकों के स्थिर रुख और यूएस द्वारा नए प्रतिबंध न लगाने के चलते 2019 में यूएस डॉलर के मुकाबले रूबल के मूल्य में कुछ सुधार आया और 1 यूएस डॉलर के मुकाबले इसका मूल्य 64.8 रूबल हो गया। वर्ष 2019 में चालू खाता सरप्लस में कुछ गिरावट रहने की आशंका है। यह वर्ष 2018 में जीडीपी का 6.9% था, जिसके 2019 में 6.2% रहने की संभावना है। इसकी मुख्य वजह ऊर्जा कीमतों में गिरावट है, लेकिन कृषि निर्यात अच्छे होने से चालू खाता सरप्लस में गिरावट थोड़ी कम रहेगी।

दक्षिण कोरियाई वॉन

कंप्यूटर चिप बाजार में गिरावट, वैश्विक व्यापार में कमी और आर्थिक मंदी के चलते एशिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था दक्षिण कोरिया पर दबाव बढ़ा। दक्षिण कोरिया की आर्थिक वृद्धि में निर्यातों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन देश से निर्यातों में लगातार ग्यारहवें महीने गिरावट आई और वर्ष की तीसरी तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर पिछले वर्ष की तुलना में मात्र 2% रही, जो एक दशक के दौरान सबसे कम वृद्धि दर है।

दरअसल, दक्षिण कोरिया की आर्थिक वृद्धि इलेक्ट्रॉनिक्स की वैश्विक मांग और चीन पर बहुत अधिक निर्भर करती है। देश के जीडीपी में 45% हिस्सा निर्यातों का ही है। और देश से होने वाले कुल निर्यातों का एक चौथाई हिस्सा चीन को ही जाता है।

परिणामस्वरूप, कोरियाई वॉन पर अनिश्चितता के बादल मंडराते रहते हैं, जिसमें इस वर्ष लगभग 7% की गिरावट आई। पिछली तिमाही अर्थात अक्टूबर-दिसंबर 2019 तिमाही के दौरान कोरियाई वॉन का मूल्य 1 यूएस डॉलर के मुकाबले 1,206.89 वॉन रहा। इसके बाद यूएस डॉलर और कोरियाई वॉन के मूल्य का रुझान एकतरफा प्रतीत होता है, क्योंकि सरकार के निरंतर प्रयासों के बावजूद लोगों द्वारा निजी खर्च और रोजगार सृजन में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं आ रहा है।

मेमरी चिप बाजार में लगातार मंदी की आशंकाओं के खत्म हो जाने के बावजूद, यूएस और चीन के बीच फेज-वन डील को लेकर उम्मीदों के चलते दीर्घावधि में कुछ स्थिरता आने से पहले कोरियाई वॉन में गिरावट जारी रहने की आशंका है।

यूरो

यूरोपीय ऋण पर यूएस यील्ड लाभ में कमी के बावजूद, यूरोजोन की धीमी आर्थिक वृद्धि के चलते यूरो वर्षभर अपने स्तर पर बना रहा। यूरो/यूएस डॉलर पिछली तिमाही अर्थात अक्टूबर-दिसंबर 2019 तिमाही से लगभग 1.0899 के स्तर आसपास बने हुए थे। इसके बाद यूरो का मूल्य यूएस डॉलर के मुकाबले बढ़कर 1.1199 हो गया। इसमें 1.10 की बढ़ोत्तरी अच्छी है, तथापि, आने वाले कुछ महीनों के दौरान 1.12 के स्तर को पार कर पाना मुश्किल है।

चीन-यूएस व्यापार युद्ध के समाधान या इसमें कुछ नरमी आने और ब्रेक्ज़िट जोखिम के कम होने तथा मुद्रा क्षेत्र में सुधारात्मक वृद्धि से यूरो के मजबूत होने की उम्मीद है। हालांकि, यूरोपीय संघ की वस्तुओं पर यूएस द्वारा टैरिफ बढ़ाने की आशंका बनी हुई है।

लंदन स्थित रणनीतिकार जॉर्ज सैरावेलोस ने दिसंबर के पहले सप्ताह में प्रकाशित एक रिसर्च नोट में कहा था कि यूरोप बाकी दुनिया के लिए बड़ा ऋणदाता बन गया है। यह मुद्रा के प्रभुत्व का एक बड़ा संकेत है। अप्रवासियों को यूरोजोन बैंकों के ऋण 2008 के बाद से उच्चतम स्तर पर हैं, जबकि गैर-ईयू बैंकों की यूरो वर्ग की देयताएं भी तेजी से बढ़ी हैं।

इससे यूरोजोन की मुद्रा के जापानी येन के समान होगी, जो निवेशकों के लिए लंबे समय तक पसंदीदा चैनल बनी रही थी, जो उच्च दरों की ऑफरिंग वाली आस्तियां खरीदने के लिए न्यून यील्ड वाली मुद्रा में ऋण चाहते हैं।

यूरोजोन में वृद्धि स्थिर हो रही है और अगले दो वर्षों में इसमें मामूली वृद्धि होने की उम्मीद है। आने वाले समय में, ईसीबी की उदार नीतियों का प्रभाव वास्तविक अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा और इन नीतियों को लागू करने वाले देशों से मामूली वित्तीय बढ़त मिलेगी। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मंदी से यूरो में तुलनात्मक बढ़ोत्तरी हो सकती है। इसलिए, बाजारों को 2020 की चौथी तिमाही में यूरो में 1.14 स्तर तक बढ़ोत्तरी की उम्मीद है।

मलेशियाई रिंगित

यूएस डॉलर के मुकाबले म्यांमार रिंगित 4.1300 मूल्य का रहा और अगस्त 2019 के दौरान 4.2150 के स्तर पर आ गया। इसके बाद इसमें धीरे-धीरे सुधार शुरू हुआ और 17 दिसंबर, 2019 को यह यूएस डॉलर के मुकाबले 4.1410 तक रहा।

बैंक नेगारा मलेशिया (बीएनएम) ने निकट भविष्य को ध्यान में रखते हुए मांग आधारित दबावों की अनुपस्थिति में 5 नवंबर, 2019 को उदार मौद्रिक नीति को जारी रखा। तथापि, यदि बाहरी चिंताएं खत्म हो जाती हैं तो सांविधिक आरक्षित निधि अनुपात (एसआरआर) में 50 बीपीएस की अचानक कटौती किए जाने से स्थानीय इक्विटी और बॉन्डों को बढ़ावा मिलेगा।

लेकिन महंगाई कुछ हद तक बढ़ी है, जो दर्शाता है कि जून 2018 में वस्तु एवं सेवा कर समाप्त करने से कोई खास असर नहीं पड़ा है। अक्टूबर 2019 में हेडलाइन सीपीआई में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 1.1% की बढ़ोत्तरी हुई थी, मई में यह आंकड़ा वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 0.2% था। वर्ष 2019 में हेडलाइन महंगाई दर वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 1.3% रहने की उम्मीद है। 5 नवंबर को हुई हालिया मौद्रिक नीति बैठक में बीएनएम ने ओवरनाइट पॉलिसी दर को 3.0% पर अपरिवर्तित रखा। मौद्रिक प्राधिकारियों द्वारा घरेलू और वैश्विक आर्थिक वृद्धि स्थिति तथा नीतिगत उपायों की ज़रूरत को देखते हुए माना जा रहा है कि सेंट्रल बैंक निकट भविष्य में बेंचमार्क ब्याज दर को अपरिवर्तित ही रखेगा।

आगामी तिमाहियों के दौरान घरेलू मांग से अर्थव्यवस्था को बल मिलता रहेगा, जबकि कमजोर वैश्विक वृद्धि के चलते बाहरी क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यूएस और चीन के बीच जारी व्यापार तनावों का असर आपूर्ति श्रृंखला पर भी पड़ेगा और वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र पर भी इसका असर विपरीत पड़ेगा।

एक्ज़िम बैंक ने भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने और भारतीय उद्यमियों के बीच व्यापार वित्त, ऋण बीमा और व्यापार से संबंधित अन्य जानकारियों के अभाव को कम करने के प्रयास में एक्ज़िम मित्र नाम से एक पोर्टल लॉन्च किया। इसके दो उद्देश्य हैं। एक, व्यापार से जुड़ी सूचनाएं देना और दूसरा, निर्यातकों और आयातकों तक ऋण एवं बीमा की पहुंच को सुगम बनाना। एक्ज़िम मित्र, अंतरराष्ट्रीय व्यापार को लेकर भारतीय उद्यमियों से प्राप्त होने वाले सवालों का समाधान करने का प्रयास करता है। ऐसे ही कुछ सवाल और उनके समाधान नीचे दिए गए हैं:

वार्षिक आवश्यकताओं के लिए अग्रिम प्राधिकार संबंधी सूचना:

जवाब – अग्रिम प्राधिकार ऐसी सामग्री के शुल्क रहित आयात के लिए जारी किया जाता है, जिनका इस्तेमाल निर्यात किए जाने वाले उत्पाद में भौतिक रूप से किया जाता है। इसके अतिरिक्त, ईंधन, तेल, ऊर्जा, जिनका इस्तेमाल निर्यात किए जाने वाले उत्पाद के उत्पादन में होता है, उनके लिए भी अग्रिम प्राधिकार दिया जा सकता है। विदेश व्यापार महानिदेशक सार्वजनिक सूचना के जरिए किसी भी उत्पाद (उत्पादों) को अग्रिम प्राधिकार की सूची से बाहर कर सकते हैं।

वार्षिक आवश्यकता के लिए अग्रिम प्राधिकार हासिल करने हेतु पात्रता

(i) कम से कम पिछले दो वित्तीय वर्षों के लिए निर्यात निष्पादन कर चुके निर्यातक ही वार्षिक आवश्यकताओं के लिए अग्रिम प्राधिकार के लिए पात्र हैं।

(ii) पिछले वित्तीय वर्ष में आयातों की लागत के बीमा और ढुलाई भाड़े के संबंध में पात्रता, भौतिक निर्यात के फ्री ऑन बोर्ड मूल्य और / अथवा डीम्ड निर्यात के फ्रेड ठन रोड एंड रेल (एफओआर) मूल्य के 300% तक अथवा 1 करोड़ रुपये, जो भी उच्चतर हो।

भारत में निर्माण कार्यों में लगने वाली कीलों के आयात के लिए सीमा शुल्क की गणना

जवाब – ये कीलें मुख्य रूप से 4 डिजिट वाले एचएस कोड 7317 और 7318 में आती हैं। आयातकों को सबसे पहले डीजीएफटी डाटाबेस से 6 डिजिट या 8 डिजिट वाले सही एचएस कोड को चिह्नित करना चाहिए।

अपने उत्पाद के लिए सीमा शुल्क संबंधी जानकारी पाने के लिए, एक्ज़िम मित्र पोर्टल पर ही निर्यात आयात की जानकारी सेक्शन में सीमा शुल्क कैल्कुलेटर पर जाया जा सकता है।

पहला कदम: यहां आयात संबंधी व्यापार निर्देश पर क्लिक करें।
दूसरा कदम: सीटीएच कॉलम में अपना एचएस कोड लिखें, उत्पाद के उत्पत्ति स्थान में देश का चयन करें और खोजें।
तीसरा कदम: अपने उत्पाद के एचएस कोड पर क्लिक करें।
आयातक अपने नजदीकी ईईपीसी कार्यालय या डीजीएफटी कार्यालय जा सकते हैं और वहां से आयात संबंधी विनियमों पर उनसे परामर्श ले सकते हैं।

मोटरसाइकल विनिर्माताओं के लिए प्लास्टिक और स्टील के नट–बोल्ट के एचएस कोड वर्गीकरण संबंधी जानकारी:

जवाब – विदेश व्यापार महानिदेशालय – आयात नीति के अनुसार, भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अंतर्गत प्लास्टिक के नट–बोल्टों का आयात, सेक्शन VII अध्याय 39 (प्लास्टिक और प्लास्टिक की वस्तुएं), जहां स्टील के नट बोल्ड भारतीय व्यापार वर्गीकरण, सेक्शन XI अध्याय 73 (लौह और इस्पात की वस्तुएं) के अंतर्गत आते हैं। निर्यातक / आयातक अपने उत्पादों के एचएस कोड वर्गीकरण के संबंध में अधिक जानकारी के लिए डीजीएफटी की अधिसूचनाएं देख सकते हैं।

चाय और मसालों के निर्यात के लिए विदेश में क्रेताओं की जानकारी

जवाब – कृषि और प्रसंस्करण खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के Agrixchange पोर्टल के अंतर्गत आयातकों की डायरेक्टरी है। इसके जरिए निर्यातक अपने उत्पादों के आयातकों की सूची देख सकते हैं।

निर्यातक अपने उत्पादों के आयातों के लिए एक्ज़िम मित्र के निर्यात–आयात की जानकारी के अंतर्गत वैश्विक उत्पाद बाजार सेक्शन पर जा सकते हैं।

पहला कदम: निर्यात टैब पर क्लिक कीजिए और अपने उत्पाद का विवरण/एचएस कोड एंटर कीजिए।

दूसरा कदम: अपने निर्यातों के लिए देश का नाम एंटर कीजिए और कंपनी टैब पर क्लिक कीजिए।

तीसरा कदम: आपके उत्पादों की आयातक कंपनियों की सूची और उनके संपर्क विवरण यहां मिल जाएंगे।

निर्यातक इंडियन ट्रेड पोर्टल नाम की वेबसाइट पर फॉरेन बायर्स सेक्शन भी देख सकते हैं।

आयात–निर्यात कोड के लिए रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया संबंधी सूचना

जवाब – निर्यातक/आयातक नए आईईसी कोड के लिए डीजीएफटी की वेबसाइट पर आवेदन कर सकते हैं।
डीजीएफटी की वेबसाइट पर शीघ्र संपर्क सेक्शन में नए आयात–निर्यात कोड (आईईसी) /मौजूदा आईईसी में संशोधन के लिए आवेदन करें सेक्शन में जाएं। अपना पैन नंबर एंटर करें और सर्च बटन पर क्लिक करें। इसके बाद सिस्टम से निम्नलिखित मैसेज आएगा:
(क) कंपनी का नाम (ख) जन्म तिथि / निगमित होने की तारीख
उपर्युक्त (क) और (ख) में वांछित विवरण प्रदान करने के बाद सीबीडीटी पैन वेब सर्वर से सिस्टम आपका नाम, जन्म तिथि / निगमित होने की तारीख सत्यापित करेगा और इसके बाद आपको सीधे डीजीएफटी–आईईसी आवेदन के लिंक पर ले जाएगा, जहां आप नए आईईसी के लिए आवेदन कर सकते हैं।

पोल्ट्री फीड के आयात संबंधी जानकारी

जवाब – डीजीएफटी के अनुसार, पोल्ट्री फीड का आयात अध्याय 23 (खाद्य उद्योगों से अपशिष्ट और अवशिष्ट: तैयार पशु चारा)

नीति, शर्तें / अपेक्षाएं
पशु चारे का आयात, जिनमें एनिमल ऑरिजिन मैटीरियल होता है, आईटीसी (एचएस) कोड 2309 के अंतर्गत 'पशु चारे में इस्तेमाल होने वाली सामग्री' के अंतर्गत आता है, जिसके लिए सैनिटरी आयात परमिट की जरूरत होती है। यह परमिट मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार द्वारा पशुधन आयात अधिनियम, 1898 की धारा 3ए के अंतर्गत (पशुधन आयात (संशोधन) अधिनियम, 2001 (2001 का अधिनियम संख्यांक 28, 29 अगस्त, 2001) में शामिल अनुसार अथवा समय–समय पर संशोधित अनुसार प्रदान की जाती है।
निर्यातकों / आयातकों के लिए पशुधन और पशुधन उत्पादों के आयात और निर्यात से संबंधित अन्य जानकारियों के लिए पशु संगरोध एवं प्रमाणीकरण सेवा की वेबसाइट उपयोगी हो सकती है।

आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

मर्चेंडाइज व्यापार

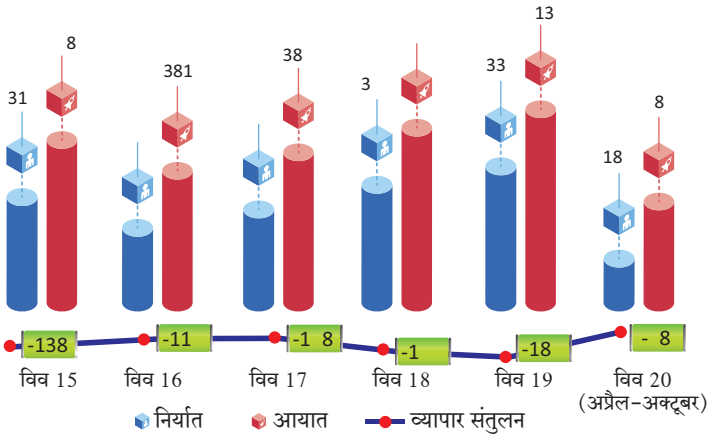

स्रोतः वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

सेवाएं व्यापार

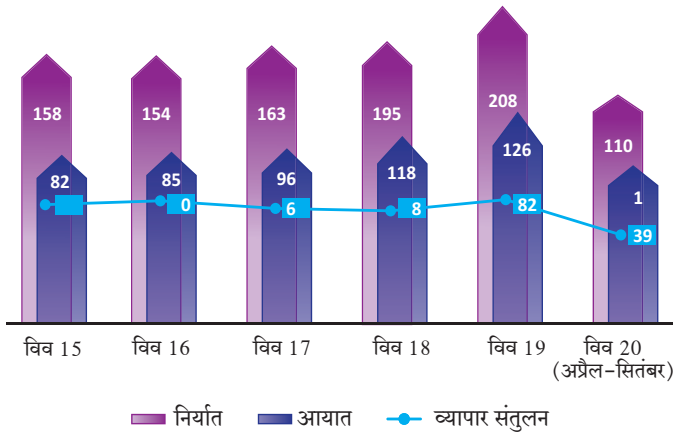

स्रोतः आरबीआई

चालू खाता घाटा

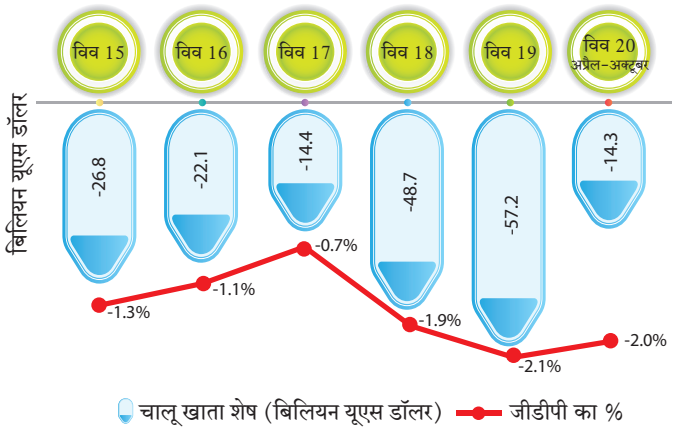

स्रोतः आरबीआई

उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति

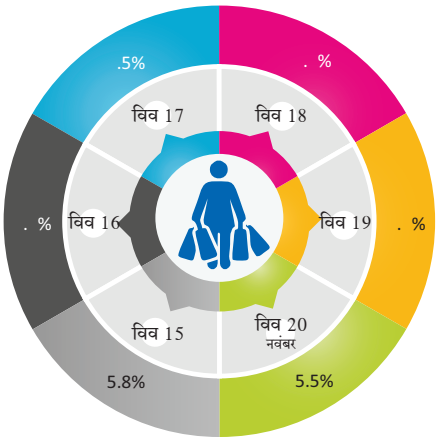

स्रोतः सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह

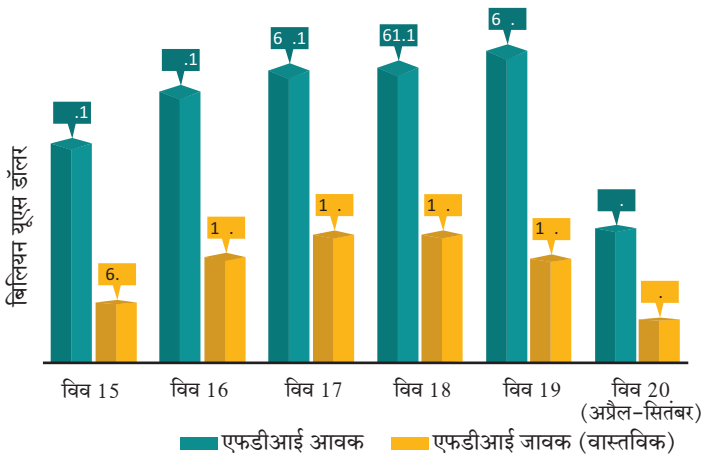

स्रोतः आरबीआई और वित्त मंत्रालय

सेक्टोरल उत्पादन

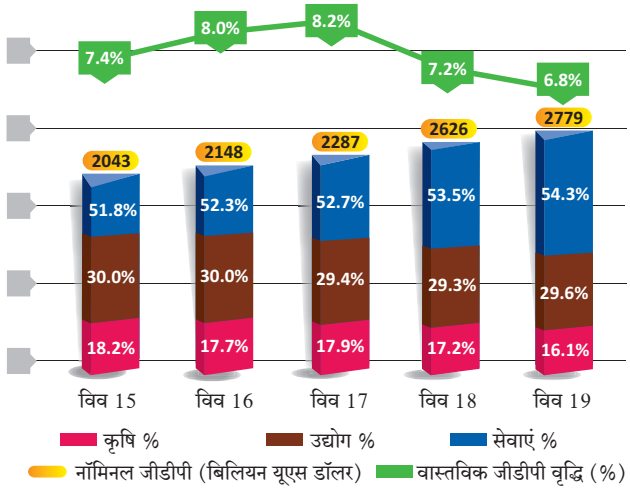

स्रोतः आईआईएफ तथा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय *नोटः ई- आकलन*